सम्पादक

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

सहायक

मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही

मजलिसे सहाफ़त व नशरियात

पो0 बॉ0 नं0 93

नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ

फोन : 0522–2740406

फैक्स : 0522–2741221

E-mail : nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 12/-
वार्षिक	₹ 120/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस डालर

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

रोकेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात

नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

अक्तूबर, 2011 वर्ष 10 अंक 08

बिदअ़त व सुन्नत

कुछ लोग हैं बिदआ़त को देते हैं वह फ़रोग़
कुछ लोग हैं बिदआ़त पे रखते हैं रोक टोक
कुछ लोग हैं ये चाहते उम्मत में रहे फूट
उम्मत के नेक लोगों पे गढ़ते हैं खुला झूठ
या रब ये लोग समझें कि बिदआ़त है बुरी चीज़
सुन्नत को लोग जानें कि सुन्नत है बड़ी चीज़
लाखों पढ़ें दुरूद सब लाखों पढ़ें सलाम
पर रिया फटके नहीं बिदआ़त से ना हो काम

इदारा

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हों तो उसका नम्बर भी लिखें।

Desining & Editing by : Qamaruzzama- +91 94522 95052, +91 727527805

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
इस्लामी दअ़वत	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
इस्लाह व इस्तेफादह से कोई	हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली नदवी	8
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	13
दोस्त और दुश्मन की पहचान	मौ0 सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी	15
आदर्श शासक	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	16
अच्छे लोगों की संगत और उसका प्रभाव	मौ0 सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी	18
बक़री वाली बड़ी बी का हज	इदारा	20
मुस्लिम समाज	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	22
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी	23
हज़रात अहले बैत अतहार रज़ि0	खालिद फैसल नदवी	26
दो साहसी युवतियाँ	इदारा	30
इस्लामी सभ्यता की विशेषताएं	मुस्तफा हसनी अस्सबाई	32
इस्लाम में न्याय, सहानुभूति और सद्व्यवहार	मौलाना सैय्यद हामिद अली	36
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	39

क़ुर्आन की शिक्षा

–मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर–ए–बक़रह

अनुवाद : फिर हमने कहा, मारो उस मुर्दे पर उस गाय का एक टुकड़ा[1], इसी प्रकार ज़िन्दा करेगा अल्लाह मुर्दों को, और दिखाता है तुमको अपनी क़ुदरत के नमूने, ताकि तुम चिन्तन–मनन करो[2(73)]। फिर तुम्हारे दिल सख़्त हो गए उसके बाद[3], अतः वह हो गए पत्थर जैसे, अथवा उनसे भी कठोर, और पत्थरों में तो ऐसे भी हैं जिनसे जारी होती हैं नहरें, और उनमें ऐसे भी हैं जो फट जाते हैं और निकलता है उनसे पानी, और उनमें ऐसे भी हैं जो गिर पड़ते हैं अल्लाह के डर से और अल्लाह बेखबर नहीं है तुम्हारे कामों से[4(74)]। अब क्या तुम ऐ मुसलमानो! आशा रखते हो कि वह मानें तुम्हारी बात, और उनमें एक समूह था कि सुनता था अल्लाह का कलाम, फिर बदल डालते थे उसको जानबूझ कर, और वह जानते थे[5(75)]। और जब मिलते हैं मुसलमानों से, कहते हैं हम मुसलमान हुए, और जब अकेले होते हैं एक दूसरे के पास तो कहते हैं कि तुम क्यों कह देते हो, उनसे ज़ाहिर किया है अल्लाह ने तुम पर ताकि झुटलाएं तुमको उससे तुम्हारे रब के आगे, क्या तुम नहीं समझते[6]।

तफ़्सीर (व्याख्या)

1. अर्थात जब एक टुकड़ा उस गाय का, उसको मारा तो अल्लाह के आदेश से वह जीवित हो गया और खून ज़ख़्म से बहने लगा और अपने हत्यारे का नाम बता दिया जो उसी बधित (मक़्तूल) के भतीजे थे। धन के लालच में चचा को जंगल में ले जाकर मार डाला था, फिर वह उनका नाम बता कर गिर पड़ा और मर गया।

2. अर्थात इसी प्रकार अल्लाह प्रलय (क़यामत) के दिन अपनी पूर्ण शक्ति से मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और अपनी निशानियाँ तुम को दिखलाता है कि शायद तुम चिन्तन करो और समझ लो कि अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा कर सकता है।

3. अर्थात "आमील" के जीवित हो जाने के पश्चात तात्पर्य ये कि ऐसी अल्लाह की कुदरत देख कर भी तुम्हारे दिल नरम न हुए।

4. अर्थात कुछ पत्थरों से बड़ा लाभ प्राप्त होता है कि नहरें और पानी अधिकता से उससे जारी होते हैं और कुछ पत्थरों से पानी कम निकलता है और पहली वाली किस्म के मुक़ाबले कम लाभ प्राप्त होता है और कुछ पत्थरों से यद्यपि किसी को फायदा नहीं पहुँचेगा मगर स्वयं उनमें एक प्रभाव तो मौजूद है, मगर उनके हृदय उन तीनों प्रकार के पत्थरों से बहुत सख़्त हैं, न उनसे किसी को फायदा और न उनमें कोई भलाई मौजूद है। और अल्लाह ऐ यहूदियो! तुम्हारे कर्मों से कदापि अनभिज्ञ नहीं है।

5. "फरीक़" से मुराद वह लोग हैं जो कोहे तूर पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ ईश्वरीय कथन (कलामे इलाही) सुनने के लिए गए थे, उन्होंने वहाँ से आ कर ये परिवर्तन किया

शेष पृष्ठ .....12 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मय्यत की पर्दा पोशी

—अमतुल्लाह तरन्नुम

हज़रत राफे असलम रज़ि0 हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से रिवायत करते हैं कि आप सल्ल0 ने फरमाया, जो किसी मुर्दे को नहलाए और उसके ऐब की पर्दा पोशी करे तो अल्लाह उसकी मग़फिरत चालीस बार करेगा।

(मुस्लिम)

क़फन-दफन की फ़ज़ीलत–

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि जो जनाज़े के हमराह हो फिर उस पर नमाज़ पढ़े, उसके लिए एक क़ीरात है और जो दफन में शरीक हो उसके लिए दो क़ीरात सवाब है। लोगों ने पूछा, दो क़ीरात क्या होते हैं? आपने कहा दो पहाड़ों के बराबर।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फरमाया जो आदमी मुसलमान के जनाज़े के पीछे खुदा के वादों पर ईमान रखते हुए और सवाब की उम्मीद रखते हुए जाए और नमाज़ व दफन में शरीक रहे तो वह दो क़ीरात सवाब लेकर पलटेगा और हर क़ीरात उहद के बराबर है और जो नमाज़ पढ़ कर दफन करने से पहले चला आया तो उसके लिए एक क़ीरात सवाब है।

(बुखारी)

औरतों को जनाज़े के साथ जाने की मनाही– हज़रत उम्मे अतिया रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने हमको जनाज़े के साथ जाने से मना किया है मगर तशद्दुद नही किया। (बुखारी)

नमाज़ पढ़ने वालों की बड़ी फ़ज़ीलत– हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि जिस जनाज़े पर मुसलमानों की एक जमाअत (समूह) में लगभग सौ आदमी हों और नमाज़ में शरीक हों और मय्यत के लिए सिफारिश करें तो उनकी सिफारिश उसके हक़ में कुबूल की जाएगी। (मुस्लिम)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को कहते हुए सुना है कि जो मुसलमान मर जाए और उसके जनाज़े पर चालीस मुहद्दिद (एकेश्वरवादी) शरीक हों तो उनकी सिफारिश उनके हक़ में कुबूल की जाएगी। (मुस्लिम)

हज़रत इब्ने अब्दुल्लाह रज़ि0 यज़नी से रिवायत है कि मालिक बिन हुबैरह जब किसी जनाज़े पर नमाज़ पढ़ते थे और लोग कम होते थे तो उनको तीन सफों (पंक्तियों) में बांट देते थे और कहते थे कि जिस जनाज़े पर मुसलमानों की तीन सफें नमाज़ पढ़ लें तो उसपर जन्नत वाजिब (अनिवार्य) हो गई।

(अबूदाऊद–तिर्मिज़ी)

जनाज़े को जल्दी ले जाओ–

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने कहा कि जनाज़े को जल्दी ले जाओ, अगर मुर्दा नेक है तो उसको भलाई की तरफ जल्दी पहुँचाओ और वह बद है तो उसको जल्दी अपनी गर्दन से उतार फेंको। (बुख़ारी–मुस्लिम)

और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि बेहतर है कि जल्द ले जाओ।

शेष पृष्ठ .....12 पर

इस्लामी दअवत

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

मौजूदा दौर और मौजूदा हालत में इस्लामी दअवत के दो मैदान हैं : मुस्लिम समाज और गैर मुस्लिम समाज।

मुस्लिम समाज : भारत के बहुत से मुसलमान अपने को अरब खानदान से जोड़ते हैं और वह हसनी, हुसैनी, अल्वी, हाशमी, अब्बासी आदि कहलाते हैं। यह अपने को सैय्यद कहते हैं, कुछ सिद्दीकी, फारूकी, उस्मानी आदि कहलाते हैं यह शैख कहे जाते हैं। कुछ अपने को बाज़ सहाबा से जोड़ते हैं। एक बड़ी तादाद, खान या पठान कहलाती है। कुछ अपने मशहूर क़बाइल के नाम से पुकारे जाते हैं, कुछ अपने पेशे से मंसूब हैं, यह सब अपने को पुश्तैनी मुसलमान कहते हैं। बहुत कम तादाद ऐसी भी है जो खुद या उनके बाप या दादा या परदादा इस्लाम में दाखिल हुए थे। इस मुस्लिम समाज का हम जाएज़ा लेते हैं तो अल्लाह का शुक्र है एक बड़ी तादाद नमाज़, रोज़ों की पाबन्द, और अपनी ज़िन्दगियों में इस्लाम को जारी व सरी किये हुए है। लेकिन यह दो बड़े ग्रुपों में बटे हुए हैं, एक ग्रुप वह है जो अपनी ज़िन्दगी कुर्आन व हदीस की तअलीमात के मुताबिक़ गुजारता है, जो बात किताब व सुन्नत से साबित नहीं उसे नही अपनाता। दूसरा ग्रुप वह है जो कुर्आन व हदीस को तो लिये हुए है, साथ ही किसी बुज़ुर्ग की किसी हाल में इख्तियार किये हुए बाज़ कामों को दीन में दाखिल कर लिया है, जैसे बुजुर्गों का उर्स, क़ब्रों पर इमारत, बुजुर्गों की कब्रों का पुख्ता करना, बल्कि सफेद पत्थर से बनाना, उसको गिलाफ पहनाना, उस पर चढ़ावा चढ़ाना, वगैरह। नीज़ एक खास किस्म का ज़िक्र मिलाद करना, जिसमें खड़े होकर सलाम पढ़ने को ज़रूरी कर देना, वफात पाए हुए लोगों को एक खास तरीके से फातिहा देना, किसी की वफात पर तीजा या चालीस्वां वगैरह करना, इन सब को यही नहीं कि उनको अपना रखा हो बल्कि बिदअते हसना कहकर उसको जवाज़ की सनद दे दी है।

इन दोनों तब्कों में बड़े–बड़े उलमा, और तकरीर करने वाले हैं और इनके बड़े–बड़े इदारे हैं, जहाँ इन दीनी ग्रुपों की आला तअलीम होती है, फिर इन दोनों ग्रुपों के इदारों से निकलने वाले उलमा एक दूसरे को गलत बताते हैं।

भारत के मुसलमानों के इन दोनों ग्रुपों के उलमा की तादाद दो तीन फीसद से ज़्यादा न होगी। अवामुन्नास की 98 फीसद तादाद में मुश्किल से 25 फीसद तादाद रोज़ा नमाज़ करने वालों की होगी। उनमें 75 फीसद अपने को मुसलमान कहते हैं, खत्ना कराते हैं, ज़बीहा खाते हैं, निकाह व तलाक को भी अपनाए हुए हैं। वफात पर किसी मौलवी को बुला कर नमाज़े ज़नाजा भी पढ़वाते हैं, और कब्र में दफ्न भी करते हैं, लेकिन न तो उन्हें पाँच वक्त की नमाज़ से सरोकार है न रमज़ान के रोज़े से। अलबत्ता ईदैन की नमाज़ जैसे–तैसे अदा कर लेते हैं, लेकिन रमज़ान के रोज़े नही रखते। इनमें न जाने कितने ज़ुआ, शराब जैसी लतों में मुब्तला (ग्रस्त) हैं। नाच–बाजा को बिल्कुल बुरा नही समझते और न जाने किन किन बुराइयों में मुब्तला हैं, इनकी अक्सरीयत शैतान के चंगुल में है। बेशक यह सब मरदुम शुमारी (जनगणना) में मुसलमान हैं, मगर

क्या अल्लाह तआला को ऐसे ही मुसलमान मतलूब हैं? क्या अल्लाह के रसूल सल्ल0 ऐसे ही मुसलमान चाहते थे? हरगिज़ नहीं। अल्लाह तआला हमारी गल्तियों को मुआफ फरमाए, इन बेचारों की अगर इस्लाह न हुई तो इनका कहाँ ठिकाना होगा? परा दीन की तब्लीग करने वालों के लिए इस मुस्लिम समाज में काम करके अपने भाइयों को अल्लाह की नाराज़गी से बचाना और नबी सल्ल0 का सही उम्मती बनाना बहुत जरूरी है।

अल्लाह का शुक्र है कि दीन बरपा करने वाले अनगिनत लोग इस काम पर लगे हुए हैं, कुछ लोग अपनी तकरीरों से, कुछ अपनी तहरीरों (लेखों) से, कुछ इन्फिरादी तौर पर, कुछ जमाअत बनाकर जैसे तब्लीगी जमाअत वगैरह सब अपने तन, मन, धन से दीन बरपा करने की कोशिशों में लगे हुए हैं, अल्लाह उनकी मदद करे।

लेकिन अफसोस यह काम सिर्फ उस ग्रुप वाले कर रहे हैं जो किताब व सुन्नत वाला अमल अपनाएं हैं, दूसरा ग्रुप जिसने बिदआत को अपना रखा है कि जहाँ यह दीन की दावत का काम हो रहा हो वहाँ उनके उलमा पहुँच कर अवामुन्नास को बावर कराते हैं कि यह किताब व सुन्नत वाला ग्रुप गलत रास्ते की रहनुमाई करता है, तुम्हारे बाप दादा जिस काम को करते आए हैं उसको यह छुड़ाता है, जिस अवाम में जिहालत होती है, और वह अपने बाप दादा की गलत रस्मों और बिदआत के आदी हैं वह उनके बहकावे में आकर अपना भला चाहने वालों के मुखालिफ हो जाते हैं, यहाँ तक कि लड़ने मरने को तैयार हो जाते हैं। ऐसी सूरत में दीन की दावत को आम करने वालों को सब्र व ज़ब्त से काम लेते हुए हिक्मत और अच्छी बातों के ज़रिए दावत ज़ारी रखना चाहिए। हिम्मत न हारनी चाहिए। इस विषय में बिदआत की ताईद करने वाले उलमा ने किताब व सुन्नत वाले उलमा की इस्लाही तहरीरों में से कुछ ऐसे जुमले (वाक्य) ढूंढ निकाले जिनका गलत मतलब लेने की गुंजाइश हो, फिर उनके ज़रिए अवाम को उनके खिलाफ खूब उभारा और उनसे नफरत पैदा करने की कोशिश की, फिर भी देखने में यह आ रहा है कि बिदआत की ताईद वाले ग्रुप के लोग कट–कट कर नाराज़ हो कर किताब व सुन्नत वालों की तरफ बराबर आते रहते हैं, इसलिए कि किताब व सुन्नत वाली बात सब को ठीक लगती है और हर शख़्स यह समझता है कि दीन में कुछ बढ़ाना नबी सल्ल0 की तब्लीग में एक तरह की कमी निकालना है। अल्लाह का शुक्र है कि दीन का काम करने वाले दीनी मदरसों, दीनी किताबों, दीनी रिसालों, इस्लाहे मुआशरा नीज़ सीरत के जल्सों में तकरीरों के जरिए दावत का काम जारी रखे हुए हैं और इस सिलसिले में तब्लीगी जमाअत का बड़ा हिस्सा है, इस का काम अपने मुल्क से आगे बढ़ कर आलमी पैमाने (विश्व स्तर) पर कामयाबी के साथ चल रहा है। अल्लाह तआला अपनी नुसरत व मदद से नवाज़े, आमीन।

फिर भी अभी बहुत से इलाके, गाँव वगैरह ऐसे हैं जहां मुबल्लिगीन हजरात की पहुँच नहीं हुई है, मदारिस से फारिग होने वाले उलमा को अपने–अपने इलाके का जायज़ा लेना चाहिए और जरूरत के मुताबिक दौड़ धूप करनी चाहिए।

दूसरा वसीअ तरीन (महाविशाल) इस्लाही दावत का मैदान गैर मुस्लिम समाज है। कुर्आन मजीद में बयान किया गया है कि "ला इक्राह फिद्दीन" दीन में जब्र नहीं, (2:256) दूसरी जगह है कि "आप कह दें कि यह सच्च

(इस्लाम) तुम्हारे पालनहार की ओर से है, जिस का जी चाहे इस पर ईमान लाए (माने) जिस का जी चाहे नकार दे। (18:29) पस इस विशाल समाज में इस्लामी दावत यही है कि उन्हें अच्छे ढंग से इस्लाम का तआरुफ (परिचय) दे कर बता दिया जाए कि इस्लाम का ऐलान है कि जो इस्लाम को स्वीकार करेगा उसको अल्लाह इस जीवन में शान्ति देगा तथा मरने के पश्चात शाश्वत जीवन में पुरस्कृत करेगा, और जो न मानेगा वह मरने के पश्चात सदैव के जीवन में दण्ड पाएगा। अब जिसकी समझ में आएगा कि मरने के पश्चात बरज़ख़ फिर कियामत फिर सदा का सुख या सदा का दुख वाला जीवन अवश्य आएगा वह उस जीवन की फिक्र करेगा लेकिन जो उस जीवन को समझ ही नहीं पाता तथा उसको मानता ही नहीं उसको क्या चिन्ता! लेकिन क्या इससे उस परलौकिक (आखिरत) जीवन को झुठलाया जा सकता है और अल्लाह की पकड़ से बचा जा सकता है? हम तो कहते हैं कदापि नहीं।

आज हमारे बहुत से भाई गैर मुस्लिमों में इस्लाम के परिचय का काम कर रहे हैं, हम लोग भी अपनी बुद्धि तथा शक्ति भर यह कार्य अपनाए हुए हैं, यह कार्य आज–कल अति आवश्यक बन चुका है, कारण यह कि कुछ इस्लाम के शत्रु इस्लाम का गलत परिचय देकर इस्लाम को बदनाम कर रहे हैं।

गैर मुस्लिम समाज से हमारा तात्पर्य हिन्दू भाई तथा मसीही, सिख, बौद्धी, जैनी आदि हैं। स्पष्ट है कि इनकी भाषाएं विभिन्न हैं, उनमें इस्लाम का परिचय कराने में उन्हीं की भाषा का प्रयोग करेंगे तभी तो वह समझेंगे। कुर्आन मजीद में जो सूर–ए–इब्राहीम आयत नं0 6 में बताया गया है कि "हमने जो रसूल जिस क़ौम में भेजा उस क़ौम की जबान वाले को भेजा ताकि उन को स्पष्ट रूप से समझा सके"। लेकिन यहाँ हमारे कुछ भाई यह गलती कर रहे हैं कि हिन्दू भाइयों की ज़बान में नहीं बल्कि उनके एतिकादात (आस्थाओं) में बात कर के इस्लाम का परिचय करा रहे हैं। यह बड़ी भूल है। उनके पारिभाषिक शब्दों को (इस्तिलाही अल्फाज़) न प्रयोग करना चाहिए। अल्लाह, रसूल, कियामत, जन्नत व जहन्नम की जगह अगर हम उनके इस्तिलाही अल्फाज़ बोलेंगे तो इस्लाम का शुभ परिचय (सही तआरुफ) न दे सकेंगे। कुछ लोग तो प्रह्लाद को इब्राहीम, श्री कृष्ण को मूसा बता रहे हैं। सोचना चाहिए कि श्री कृष्ण का क्षेत्र प्रसिद्ध है, हज़रत मूसा अ0 का इलाका और ज़माना मालूम है। प्रह्लाद का क्षेत्र उनके पिता तथा नरसिंह अवतार पुराणों में लिखा हुआ है। उधर इब्राहीम अ0 का ज़माना, देश आदि कुर्आन की तफ्सीरों और बाइबिल के बयानात से सिद्ध हैं। इस तरह इस्लाम का परिचय तो न हो सकेगा अपितु इस्लाम से मिलते जुलते किसी नये धर्म का परिचय होगा। कुछ भाई वेद तथा गीता से इस्लाम की पुष्टि करते हैं, जब कि वेदों की टीकाओं तथा गीता के अनुवादों में उनके विद्धानों ने वह बातें नहीं लिखीं जो हमारे भाई प्रस्तुत करते हैं। हम इस्लाम के परिचय के इस तरीके से सहमत नही हैं या हमें कोई समझाए।

गैर मुस्लिमों में इस्लाग के परिचय का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हम गैर मुस्लिमों में अपने अमल से इस्लामी अखलाक प्रस्तुत करें तथा इस्लामी तालीमात उन की ज़बान में पेश करें। इस्लामी इस्तिलाहात का तआरुफ उनकी इस्तिलाहात में हरगिज़ पेश न करें बल्कि इस्लामी इस्तिलाहात की व्याख्या अच्छे शब्दों में पेश करें। ❑❑

देवनागरी लिपि में उर्दू

इस्लाह व इस्तेफादह से कोई मुस्तग़नी नहीं

--हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0

जिन लोगों को किसी मदरसे में पढ़ने का इत्तिफाक़ हुआ है या वह किसी बुजुर्ग की खिदमत में इस्तेफादह और तरबियत के लिए हाज़िर हुए हैं उनको इस का बखूबी अन्दाज़ा होगा कि ज़माना कितना ही गुज़र जाए, उस तालिब इल्म के लिए अपने मदरसे में खड़े होकर कुछ बयान करना या उस जगह जहाँ वह इस्तेफादह के लिए हाजिर हुआ करता था, कुछ अर्ज करना कितना मुश्किल काम है, मेरी मिसाल कुछ ऐसी ही है। इसलिए की मैं हमेशा अपने बुजुर्गों की खिदमत में और ख़ास कर आखिरी दौर में हज़रत मौलाना (शाह वसी उल्लाह) की खिदमत में सिर्फ इसलिए आता था कि कोई ऐसी बात सुनने में आये जिससे दिल में कुछ कैफियत पैदा हो, यक़ीन में इज़ाफा हो, इसमें ईमानी ताक़त नसीब हो और रस्म वह सूरत में सच्चाई पैदा हो।

बहुत से लोग यह समझते हैं कि जो लोग कुछ लिख पढ जाते हैं या उनको कुछ तस्नीफ व तालीफ का मौका हासिल हो जाता है तो फिर अब उनको कुछ सुनने की और कहीं जाने की और किसी से लाभ उठाने की ज़रूरत नहीं, तो इनका यह ख़्याल किसी तरह से सही नहीं। बल्कि सच यह है कि कोई आदमी किसी दौर में भी और किसी उम्र में भी गुमनामी और शोहरत की हालत में भी सुधार और उसके लाभ से मुस्तग़नी नहीं होता, हुमाँ शुमाँ का ख़ैर ज़िक्र क्या है। जिन को हुज़ूर सल्ल0 जैसी सोहबत हासिल थी, जिसको कीमिया असर कहना हकीकत में इस की कुछ तारीफ न होगी, बस यूं समझिए कि ऐसी पवित्र सोहबत जिसके बाद किसी सोहबत का तसव्वुर ही नहीं किया जा सकता और कोई सोहबत इससे बढ़ कर नहीं हो सकती, मगर फिर भी सहाबा किराम रज़ि0 को आपके बाद हमेशा इस बात की फिक्र और तलब रहती थी कि अपने ईमान में ईज़ाफा करें और हमारे दिल में वही सोज़ो गुदाज़ और वही कैफियत पैदा हो जो सोहबते नबवी में हासिल हुआ करती थी, या कम से कम इस का असर या छाप ही नसीब हो जाये।

बुख़ारी शरीफ में एक जलीलुल क़द्र सहाबी का यह क़ौल इमाम बुखारी ने नक़ल किया है कि आओ भाई! थोड़ी देर बैठ कर ज़रा ईमान की बातें करलें, और ईमान का मज़ा उठालें, ईमान के झोके आयें, हम उसे लुत्फ अन्दोज़ हों। इससे मालूम हुआ कि सहाबा को इसकी ज़रूरत महसूस हुई तो बाद वाले क्योंकर इससे मुस्तग़नी हो सकते हैं? बल्कि हक़ीक़त यह है और जिन लोगों को अनुभव है वह जानते हैं कि कहने–सुनने से आदमी के दिल में ज़रूर एक कैफियत सी पैदा हो जाती है। इसलिए हमाँतन गोश होकर किसी अल्लाह वाले की बातें सुनें ताकि कल्ब (हृदय) में ऐसा खौफ पैदा हो जिससे क़ल्ब ज़िन्दा हो।

गर्ज़ जिन लोगों को ज़रा भी तजुर्बा है और उनके कुलूब मुर्दा नहीं हो चुके हैं, वह खुद जानते हैं कि उनको दूसरों से हज़ार दर्जा ज़्यादा अपने ईमान को ताज़ा करने की ज़रूरत है, और अल्लाह वालों की बात अदब व ताज़ीम के साथ सुनने की

ज़रूरत है। अगर वह समझें की हम मुस्तग़नी हैं या हम भरे हुए हैं तो उनसे ज़्यादा महरूम व बदकिस्मत कोई नहीं। बुज़ुर्गाने दीन ने इस की ऐसी मिसाल बयान फरमाई है कि अगर कोई फकीर इस तरह सदा लगाये कि यूं तो मेरे पास सब कुछ है, हमारा कशकोल भी भरा हुआ है फिर भी सदा लगाता हूं, तो बड़े से बड़ा सख़ी (दानी) के अन्दर सख़ावत का जज़्बा पैदा नहीं होगा। इसके लिए इस बात की ज़रूरत है कि अपने को मोहताज़ ज़ाहिर किया जाये, यही हाल अब यहाँ भी होना चाहिए (यानी अल्लाह वालों के यहाँ) इन हज़रात के यहाँ इस तरह से हाज़िर होना चाहिए कि हम बिल्कुल ख़ाली हैं। मुफलिस व मोहताज बन कर आप की खिदमत में कुछ लेने के लिए आये हैं।

वाकिया यह है कि थोड़े–थाड़े वक्फे के बाद मुझे इसकी ज़रूरत महसूस होती थी कि मैं ऐसे हज़रात की खिदमत (सेवा) में हाज़िरी दूं और फिर ऐसे दौर में और हमारे जवार में मौलाना वसीउल्लाह रह0 से ज़्यादा शफकत करने वाला नज़र में कोई नहीं था और मुनासिबत की बात तो बिलकुल ग़ैर इख़्तियारी है। इसके लिए कोई मालूम और मुतय्यन उसूल नहीं है, क्यों होती है? कब होती है? कैसे होती है? इसके उसूल तो किसी बड़े से बड़े हाकिम ने भी नहीं बताये तो मुनासिबत मिनजानिब अल्लाह एक चीज़ है। बहरहाल हज़रत की सोहबत से मुझे फायदा होता था। हज़रत की शफकतों से मुतअल्लिक कुछ कहने की ज़रूरत नहीं, वह तो हमारे दोस्तों को और यहाँ के हाज़िर बाश बुज़ुर्गों को याद होगी। बाकी सबसे बड़ा फायदा यहाँ की हाज़िरी में मुझे यह होता था (जिस की शायद आप हज़रात तवक्को न करेंगे) कि दीन की हक़ीक़त इन्हीं हज़रात के यहाँ आकर मालूम होती। अगर कोई और फायदा न होता सिवाये इस उसूली और कुल्ली फायदे के तो सब से बड़ा फायदा यही था कि कहीं तो आदमी को यह मालूम हो कि वह कुछ नहीं जानता, कहीं तो आदमी को यह मालूम हो कि वह मोहताज है, तो सबसे बड़ी चोट जो यहां आकर दिमाग़ पर लगती है, वह यह है कि हम तो बिलकुल आमी व जाहिल हैं। हमें सिर्फ नक़्श आते हैं। बाकी दीन की हक़ीक़त से हम बहुत दूर नज़र आते हैं।

मुझे याद है कि हज़रत मौलाना सैय्यद सुलैमान नदवी रह0 ने जब हज़रत मौलाना अशरफ अली थानवी रह0 से रुजुअ किया तो उनके बहुत ग़ाली मुतक़ेदीन को नागवार हुआ और सैय्यद साहब से एहतिजाज किया कि हमारी जमाअत कि एक तरह से सुबकी हुई कि हमने आपको बड़ा बनाया था। गोया आप शैख़ुलकुल थे और हर चीज़ में आप इमाम का दरजा रखते थे और आपने दूसरे का दामन पकड़ लिया तो इससे हमारी ख़िफ्फत हुई। इस पर एक दिन सैय्यद साहब ने फरमाया कि यह अजीब लोग हैं, एक तरफ तो मेरे मोतकिद बनते हैं, दूसरी तरफ मुझ पर ही एतेमाद नही करते, यानी मैं अपना फायदा समझ कर वहां गया तो इनको इस से इख़्तिलाफ है, गोया मेरे उस्ताद बन कर मुझे मश्वरह देते हैं कि आप कहां चले गये? इसका मतलब तो यह हुआ कि मैं उनसें पूछ कर वहां जाता। मैं तो अपना फायदा इसमें देखता हूं और आप की खातिर वहां न जाऊँ गोया इस दौलत से मैं महरूम रहूं।

इन हज़रात के यहाँ जो बातें मिलती हैं वह सिर्फ नुक्ते और मोशीगाफियां नहीं हैं, वह तो ज़िहानत का नतीजा है। दर

हक़ीक़त ज़िहानत के चार दरजे हैं और जो ज़हानत का आखिरी दरजा है वह रूह की ज़िहानत है। यह रूह की ज़िहानत ऐसी लतीफ है कि बयाने अल्फाज़ में मुश्किल है। जहाँ दिमाग़ की सरहदें खत्म होती हैं (जिसके पहले ज़ुबान की ज़िहानत का दरजा था) वहां से क़ल्ब की ज़िहानत शुरु होती है और जहां कल्ब की ज़िहानत की सरहद खत्म होती है वहां से रूह की ज़िहानत की सरहद शुरु हो जाती है। और वह अल्लाह तआला के उन मुख्लिस और मक़बूल बन्दों को हासिल होती है जिनसे अल्लाह तआला तर्बियत का काम लेता है। इसमें सामने होना न होना, मुसाफत का क़ुब व बुअद, मारफत व अदमे मारफत सब बराबर है, कोई चीज़ इस के लिए शर्त नहीं। इन हज़रात की रूह इतनी बुर्राक़ इतनी सरीउल इदराक होती है कि बिला किसी शर्त के खैर व शर की तमीज़ उनको हासिल हो जाती है। खुसूसी तौर पर उन हज़रात के यहां जो चीज़ मुझे महसूस होती है वह यही है और वह भी अल्लाह तआला का मुझ पर बहुत बड़ा फज़्ल है कि बगैर किसी वजह के जिसकी वजह मुझे खुद नहीं मालूम अल्लाह तआला ने ऐसे बन्दों के पास मुझे पहुँचा दिया। हज़रत मौलाना मुहम्मद इलियास रह0 के यहाँ हमने रूह की ज़िहानत के खुले नमूने देखे और फिर हज़रत शाह वसीउल्लाह में। मैंने इन दोनों बुजुर्गों में बहुत ज़्यादा मुशाबिहत देखी, अगरचे अल्लाह तआला ने इन दोनों बुजुर्गों से अलग–अलग काम लिया, जौक़ भी दोनों का अलग–अलग था। लेकिन बहुत सी चीज़ों में मुशारिकत थी खुसूसन क़ल्ब की ज़िहानत और रूह की ज़िहानत।

बहरकैफ! मैं इन हज़रात के यहाँ इसलिए आया करता था कि कभी तो इस पर रऊनत और फरेब खुर्दह को यह महसूस हो कि वह कुछ नहीं है क्योंकि इससे बढ़ कर आदमी के लिए कोई चीज़ खतरनाक नहीं है कि उसको कभी–कभी यह महसूस न हो कि कोई कूचा ऐसा भी है जिससे वह वाकिफ नहीं, और खास तौर से दीन के मुतअल्लिक़ अगर यह ज़ेहन में आ जाये कि मुझे सब कुछ मालूम है और अब मुझे किसी के पास जाने की ज़रूरत नहीं तो इससे ज्यादा ख़रनाक कोई चीज़ नहीं, ऐसा आदमी जो भी दावा करदे बईद नहीं और इसी तरह के लोगों ने दावा भी किया है। उन लोगों ने दावा नहीं किया जो पहाड़ के नीचे खड़े थे कि सर उठाते तो देखते कि आसमान भी बहुत ऊँचा है। बल्कि जो लोग समझे के हम पहाड़ की चोटी पर पहुँच गये हैं उन्होंने दावा किया है। इन्सान के लिए इससे बढ़ कर कोई चीज़ नहीं, और इस पर यह बड़ा फज़्ल है कि इस को यह मालूम हो कि दीन की ऐसी जगहें भी हैं जहाँ जा कर दीन की वह बातें सुनने या देखने में आ सकती हैं, जिससे यह मालूम हो सकता है कि यह हमारा मैदान नहीं और यहां हमारा गुज़र नहीं।

कोई शख्स अगर ऐसा हो कि बोलने पर आये तो बोलता जाये और लिखने पर आ जाये तो लिखता जाये और दुनिया भर के लोग मिल कर उसकी तारीफ करने लगे तो इससे कुछ नहीं होता बल्कि उसको करने की ज़रूरत है और वह अल्लाह के कुछ खास बन्दों के ही पास होता है। यही चीज़ थी जिस की वजह से हज़रत मुल्ला निज़ामुद्दीन बानी दरसे नेज़ामिया ने सैय्यद अबदुर्रज़्ज़ाक़ *बानसवी रह0* का दामन पकड़ा जो बिल्कुल हमारे बाराबंकी और लखनऊ के देहात की बोली बोलते थे, जैसे आवत है, जावत है। यह उनकी ज़बान थी, मगर मुल्ला निज़ामुद्दीन रह0

का यह हाल है कि मनाकीबे रज़्ज़ाकिया में देखते चले जायें तो मालूम होता है कि अपने आपको उनके मुक़ाबले में बिलकुल हेच समझ रहे हैं। और आप हर दौर में इसकी मिसाल देखेंगे। तेरहवी सदी में मौलाना अब्दुल हई रह0 जिनको शाह अब्दुल अज़ीज़ रह0 खुद शैखुल इस्लाम का लक़ब देते हैं और मौलाना इस्माईल शहीद रह0 जिनको शाह साहब हुज्जतुल इस्लाम के लक़ब से याद करते हैं। चुनांचे फरमाते हैं कि शैखुल इस्लाम अब्दुल हई और हुज्जतुल इस्लाम मौलाना इस्माईल शहीद रह0 अगरचे यह दोनों मेरे अज़ीज़ हैं और मुझ से छोटे हैं मगर इज़हार हक़ वाजिब है। इसलिए कहता हूँ कि अल्लाह तआला ने इन लोगों को वह मुक़ाम इनायत फरमाया है जो कमतर किसी को हासिल है।

नीज़ फरमाते हैं कि इन को मुझ से कम न समझो। तो उन लोगों को देखिए कि सैय्यद अहमद शहीद रह0 से रुजुअ हुए जो कि उम्मी तो नहीं थे मगर फारसी दाँ महज़ थे और जो कोई पास से गुज़रता उससे पूछते अरे भाई! इस लफ़्ज़ के क्या मआनी हैं? ज़रा बताते जाइए, उनका यह इल्म था, और मौलाना अब्दुल हई से तो इन्होंने पढ़ा लिखा भी था। इसके बावजूद इन दोनों हज़रात ने सैय्यद साहब की रकाब थामीं तो मरते दम तक न छोड़ी। जब कोई पूछता कि आप लोगों ने सैय्यद साहब में क्या बात देखी जिस् की वजह से उनकी तरफ रुजुअ किया? हालांकि वह इल्म में भी आप के मुक़ाबिल कोई मुक़ाम नहीं रखते तो फरमाते भाई! हमको नमाज़ पढ़नी भी नहीं आती थी उन्होंने नमाज़ पढ़ना सिखाया, रोज़ा रखना न आता था उन्होंने रोज़ा रखना सिखाया। मैं यह अर्ज कर रहा था कि यह भी जरूरी है कि कोई जगह ऐसी हो जहां पढ़े लिखे को भी जाकर मालूम हो कि मैं कुछ नहीं हूँ। अगर खुदा न ख्वास्ता ऐसी जगहें खत्म हो गई और ऐसे अल्लाह के बन्दे न रहे, अगर सिर्फ मुद्दियाने इल्म रह गये और हम जैसे लोग रह गये जिन के मुतअल्क़ि लोग मालूम नहीं क्या–क्या समझते हैं तो यह बड़े खतरे की बात है।

अल्लाह तआला का बहुत बड़ा फज़्ल है कि कुछ ऐसे हज़रात मौजूद हैं जहां न किसी खुश बयानी की ज़रूरत है और न किसी बड़े वसीय मुताला की हाजत।

मैं तो कहा भी करता हूँ और इसमें तन्हा नहीं हूँ कि आज कल के उलेमा के वाज़ में मेरा जी नहीं लगता है। जल्से की तहक़ीर और उलेमा की तन्क़ीस नहीं करता और उसके फायदे का भी इन्कार नहीं, लेकिन खुदा जाने क्या बात है इसको बीमारी समझ लीजिए कि मेरा जी नहीं लगता। हमारा जी तो बस ऐसे वाज़ में लगता है जिसमें खालिस अल्लाह और उसके रसूल की बात पुराने अन्दाज़ से कही जाये और जन्नत व दोज़ख़ का तज़किरह किया जाये। चुनांचे जब यह हज़रात तक़रीर करते हैं तो साफ मालूम होता है, न यह किताबी इल्म है न किताबों की बातें हैं बल्कि यह इल्मी बातें हैं, सीधी सादी दीन की बातें, और ऐसे अन्दाज़ से कही जाती हैं कि हमको भी इससे फायदा होता है।

हज़रत मौलाना कि ख़िदमत में भी हम जब आते थे तो मालूम होता था कि जो कुछ फरमा रहे हैं वह हक़ीक़त है और उनके यहां लब्बो लुबाब है, यह नहीं कि एक चीज़ को खूब फैला कर बयान किया जा रहा है। यह चीज़ तो हमको दूसरी जगह नहीं मिलती।

हमारे यहां कुतुबखानें और दूसरे ज़राये हैं जिनसे हम किसी भी मज़मून को फैला सकते हैं। लेकिन इन हज़रात के यहां इनकी नौअियत ही कुछ और है।

मौलाना जामी रह0 ने कहा कि मैं और जगहों पर गया वहाँ यह चीज़ महसूस न हुई जो हज़रत की खिदमत में आकर महसूस हुई। इसके मुतअल्लिक कुछ अर्ज करना चाहता हूँ। वह यह कि बुजुर्गों के यहां कोई बुनियाद, कोई नया इल्म, कोई नई तहकीक, कोई नया इन्केशाफ नहीं है। इस बारे में भी लोग बहुत ग़लत फहमी में हैं। मालूम नहीं क्या समझते हैं कि बुजुर्गाने दीन के यहां जाकर कैसे–कैसे दीन के इसरारों नुकात और अजीब अजीब तहकिकात सुनने में आयेंगी। चुनांचे मुहिउद्दीन इब्ने अरबी के यहाँ तो ऐसे ऐसे नुकात हैं कि बड़े–बड़े फलसफी उन को सुनने के बाद कान पकड़ लें और समझें कि हमें तो इल्म की हवा भी नहीं लगी। लेकिन इन हज़रात के यहां से जो चीज़ लेने की है वह यह है कि सूरत और रस्म में हकीकत पैदा की जाए और मैं समझता हूँ कि यही खुलासा भी है तसव्वुफ का, जिसका मतलब गोया बस इसके सिवा कुछ नहीं कि नमाज़ तो पढ़ते है। सही नमाज़ पढ़ने लगें। नियत सही नहीं थी, इख़्लास सही नहीं था, रुख़ सही नहीं था, हकीकत पैदा हो जाए और नियत दुरुस्त हो जाये और अल्लाह की रज़ा के लिए हम इसको करने लगें और शरीअत के अहकाम की तलाश और इन का एहतिमाम पैदा हो जाए। नीज़ इनका अदब व एहतिराम पैदा हो जाए। अहकामें शरीया के एहतमाम और इन्तिज़ाम यह दोनों ही चीज़ें जरूरी हैं।

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी .....

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फरमाया कि जब जनाज़ा रखा जाता है और लोग उसको काँधों पर उठा लेते हैं तो अगर मुर्दा नेक है तो कहता है कि मुझे जल्दी[1] ले चलो, और अगर बुरा है तो कहता है कि हाय! तुम्हारी ख़राबी, तुम मुझे कहां ले जाते हो, और आवाज़ को इन्सान के सिवा सब सुनते हैं। अगर इन्सान सुने तो बेहोश हो जाए। (बुखारी)

1. चुंकि नेक न बद को मरते वक्त अपने–अपने ठिकाने दिखाये जाते हैं, इसलिए नेक का शौक बढ़ जाता है और बद को अज़ाब की तरफ ले जाने से गुरेज़ होता है।

❑❑

कुर्आन की शिक्षा .....

कि बनू इस्राईल से कह दिया कि समस्त कथनों (सभी कलामों) के पश्चात हमने ये भी सुना है कि (कर सको तो उन आदेशों को कर लेना अन्यथा उनको न करने की भी आज्ञा है) और दूसरे लागों ने कहा कि कलामे इलाही (ईश्वरीय कथन) से मुराद तौरेत है और परिवर्तन से मुराद ये है कि (उसकी आयतों में शाब्दिक परिवर्तन व पारिभाषिक परिवर्तन करते थे) कभी आपकी नात को बदला कभी रजम की आयतों को उड़ा दिया आदि।

6. यहूदियों में जो कपटी (मुनाफ़िक़) थे वह खुशामद के तौर पर अपनी किताब में से अन्तिम सन्देष्टा की बातें मुसलमानों से बयान करते और दूसरे लोग उनमें से उनको इस बात पर लानत करते कि अपनी किताब की सनद उनके हाथ में क्यों देते हो, क्या तुम नहीं जानते हो कि मुसलमान तुम्हारे पालनहार के आगे तुम्हारी ख़बर दी हुई बातों से तुम पर इल्ज़ाम कायम करेंगे कि अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को सच जान कर भी ईमान न लाए और तुमको लाजवाब होना पड़ेगा।

❑❑

जननायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु० मुहम्मद मुफ़रान नदवी

हज़रत जाफ़र रज़ि० की तक़रीर (भाषण)— "ऐ बादशाह! हम एक जाहिलयत वाली क़ौम थे, बुतों को पूजते थे, मुर्दार खाते थे, हर क़िस्म की बेहयाइयों और गुनाहों में आलूदा थे, हममें जो ताक़तवर होता वह कमज़ोर को फाड़ खाता, हम इसी हाल में थे कि अल्लाह तआला ने हममें ही से एक रसूल भेजा, जिसके खानदान और नसब व हसब (गोत्र वंश) से और जिसकी सच्चाई से, अमानतदारी और इफ्फ़त व पाकबाज़ी (संयम व पवित्रता) से हम पहले से परिचित थे, उन्होंने हमको यह दअवत दी कि हम सिर्फ़ एक अल्लाह पर ईमान लाएं और उसी की इबादत करें, और हम और हमारे बाप–दादा जिन बुतों और पत्थरों को पूजते थे उसको बिलकुल छोड़ दें और उनसे सम्बंध तोड़ दें। उन्होंने हमें सच बोलने, अमानत अदा करने, नाजाइज़ और हराम बातों और नाहक़ खून से परहेज़ करने का हुक्म दिया। बेहयाई के कामों, झूठ–फरेब, यतीम का माल खाने, पाकदामन पर, पाकबाज़ औरतों पर इल्ज़ाम लगाने से मना फ़रमाया, उन्होंने हमको हुक्म दिया है कि हम सिर्फ अल्लाह की इबादत करें और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराएं। उन्होंने हमें नमाज़ व ज़कात, रोज़े का हुक्म दिया। हमने उनकी तसदीक़ की, उन पर ईमान लाए, और जो तरीका और तअलीम वह अल्लाह की तरफ़ से लाए, हैं उसकी पैरवी की। सिर्फ एक अल्लाह की इबादत इख़्तियार की, उसके साथ किसी और को शरीक नहीं किया, जो उन्होंने हराम किया उसको हराम माना जो उन्होंने हलाल किया उसको हलाल तसलीम किया। इस पर हमारी क़ौम हमारी दुश्मनी पर कमर बस्ता हो गई, उन्होंने हम को तरह–तरह की तक्लीफें पहुँचाई और हमको इस दीन से फेरने के लिए बहुत सी आज़माईशों (परिक्षाओं) में डाला और इसकी कोशिश की कि अल्लाह की इबादत छोड़ कर हम बुतों की इबादत इख़्तियार कर लें, और जिन गुनाहों और जिन जराएम को पहले जाइज़ समझते थे, फिर जाइज़ और हलाल समझने लगे। जब उन्होंने हमारे साथ बहुत ज़ोर–ज़बरदस्ती की, हम पर ज़ुल्म किया, हमारा जीना दूभर कर दिया और हमारे दीन के रास्ते में दीवार बन कर खड़े हो गए तो हम आपके मुल्क में पनाह लेने के लिए आए और इसके लिए आप ही का इन्तिख़ाब किया, आपके जवार और पनाह की ख़्वाहिश की, ऐ बादशाह! हम यहाँ यह उम्मीद लेकर आए हैं कि हम पर कोई ज़ुल्म न किया जा सकेगा"[1]।

नजाशी की हमदर्दी (सहानुभूति)

नजाशी यह तकरीर (भाषण) सुन कर सन्तुष्ट हुआ और प्रसन्नता के साथ कहाः जाओ तुम को यहाँ अम्न (शान्ति), है, और कुरैश के भेजे हुए लोगों को उनके तोहफ़े वापस किये और उनकी बात नहीं मानी। दूसरे दिन यह दोनों कुरैशी फिर नजाशी के पास गए और कहा कि यह हज़रत ईसा बिन मरयम को भी नहीं मानते, नजाशी ने मुसलमानों को बुला कर पूछा, इस पर हज़रत जाफर ने कुर्आन मजीद से सूरः मरयम की शुरु की आयतें तिलावत

1. सीरत इब्ने हिशामः 1/334–338, अलकामिल फित्तारीखः 2/79–82

की तो नजाशी ने ज़मीन से एक तिनका उठा कर कहा : बाख़ुदा इब्ने मरयम इससे ज़ियादा न थे और रो पड़ा, यहां तक कि आँसुओं से उसकी दाढ़ी तर हो गई। उसके दरबार के पादरियों पर गिरया (रोना) तारी हो गया, यहाँ तक कि उनकी धार्मिक पुस्तकें आँसुओं से भीग गईं और नजाशी ने कहा: मुहम्मद वही रसूल हैं जिनकी ख़बर ईसा मसीह ने दी थी, अल्लाह का शुक्र है कि मुझे उस रसूल का ज़माना मिला। उसके बाद नजाशी ने मुसलमानों को बहुत सम्मान और आदर से रुख़सत किया, उनको अपने यहाँ पनाह दी और कुरैश के दोनों क़ासिद (दूत) वहां से बेइज़्ज़त होकर निकले, और मुसलमानों ने बहुत अच्छे घर और अच्छे पड़ोस में इज़्ज़त की जगह पाई[1]।

शअ़ब अबू तालिब का घेरा–

जब कुरैश ने देखा कि हज़ारों तकलीफ़ों और मुख़ालिफ़तों के बावजूद इस्लाम का दायरा (क्षेत्र) बढ़ता जा रहा है, उमर और हमज़ा जैसे मज़बूत लोग ईमान ला चुके हैं, और नजाशी ने भी मुसलमानों को अपनी तरफ़ से हिफ़ाज़त दी है तथा उनके दूत नाकाम वापस आ गए हैं तो अब यह उपाय सोचा कि रसूलुल्लाह सल्ल0 के ख़ानदान वालों को पहाड़ के दर्रे के अन्दर क़ैद करके मजबूर और बेसहारा कर दिया जाए, और पहाड़ का यह दर्रा वही दर्रा था जिसमें अबूतालिब का ख़ानदान रहता था, जो शअ़ब अबूतालिब के नाम से मशहूर था। चुनांचे तमाम क़बीलों ने एक मुआहिदा (समझौता) मुरत्तब (संकलित) किया कि कोई शख़्स न ख़ानदान बनू हाशिम से मिले–जुलेगा, न उनके साथ ख़रीद व फ़रोख़्त करेगा, न उनके पास खाने पीने का सामान जाने देगा, जब तक वह मुहम्मद सल्ल0 को क़त्ल के लिए हवाले न कर दें। यह मुआहिदा (समझौता) मन्सूर बिन अकरमा ने लिखा और काबे के दरवाज़े पर लटकाया गया[1]।

हुज़ूर सल्ल0 अपने शफ़ीक चचा व सरपरस्त हज़रत अबूतालिब की सरपरस्ती में बनू हाशिम के अकसर लोगों के साथ जिसमें आपका दुश्मन चचा अबूलहब शरीक नहीं हुआ लेकिन ख़ानदान बनू हाशिम के वह सभी शरीक थे जो मुसलमान नहीं हुए थे लेकिन ख़ानदानी हमदर्दी रखते थे, हुज़ूर सल्ल0 के साथ शअ़ब अबू तालिब में पनाह गुज़ीं (शरणार्थी) हुए। यह ज़माना ऐसा सख़्त गुज़रा कि क़ैदी मुसलमान "तलह" के पत्ते खा–खा कर रहते थे। बच्चे जब भूख से रोते थे तो बाहर आवाज़ जाती थी, कुरैश सुन–सुन कर ख़ुश होते थे। हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास का बयान है कि एक दफ़ा सूखा चमड़ा हाथ आ गया, मैंने उसको पानी से धोया फिर आग पर भूना और पानी मिला कर खाया। लेकिन बाज़ रहम दिलों को मुसलमानों की इस हालते ज़ार पर तरस भी आता था। एक दिन हकीम बिन हिज़ाम ने जो हज़रत ख़दीजा के भतीजे थे, थोड़े से गेहूँ अपने गुलाम के हाथ हज़रत ख़दीजा के पास भेजे, रास्ते में अबूजहल ने देख लिया और छीन लेना चाहा, इत्तिफ़ाक़ से अबूल बुख़तरी कहीं से आ गया, वह अगरचि काफ़िर था लेकिन उसको रहम आ गया और उन घिरे हुए लोगों की बात सुनी जो सब एक दूसरे के अज़ीज व क़रीबी ही होते थे, उनकी बेबसी पर तरस खा कर कहा कि एक शख़्स अपनी फूफी को खाने के लिए कुछ भेजता है तो तू क्यों

1. अलकामिल फित्तारीख़ : 2/81

1. अरसीरतुन नबविया, जहबी 1/221

शेष पृष्ठ .....35 पर

दोस्त और दुश्मन की पहचान

—मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी

प्राकृतिक तौर पर इन्सान के अन्दर जो गुण पाये जाते हैं जिनसे कोई व्यक्ति, प्राणी ख़ाली नहीं हो सकता, इस दुनिया की रंग व बू में जिसने भी आँखें खोली हैं उसमें ये दोनों ही चीज़ ज़रूर पाई जाएंगी। ये दोनों बहुत ही बड़ी और महत्वपूर्ण हैं, अगर इन्सान उनको उनके अनुसार अपनाएगा तो न वो गुमराह हो सकता है और न ही उसे दुनिया व आख़िरत में बदबख़्ती का सामना करना पड़ेगा।

ये हक़ीकत का एक मसला है कि इन्सानी आबादी की इस दुनिया में दोस्ती व संबंध और जंग व युद्ध का अस्तित्व उन्हीं चीज़ों पर आधारित है।

पहली चीज़ मुहब्बत है जिसकी तरफ़ आकर्षित होना इन्सान की फितरत और प्रकृति में प्रविष्ठ है। लेकिन कई बार इन्सान अपने महबूब की पहचान में ग़लती कर बैठता है तो उसे वो फ़ाएदे नहीं हासिल होते जो उस समय हासिल हो सकते थे कि जब उसकी मुहब्बत का रुख़ सही होता, अपने महबूब की सही पहचान कर लेता। और इन्सान अपने महबूब की पहचान में ग़लती इसलिए करता है कि वो उस रास्ते पर नहीं चलता है जो उसकी मन्ज़िल तक पहुंचाये, और हक़ व सदाक़त की ओर उसके सही मार्गदर्शन का ज़ामिन हो। हालांकि इस रास्ते को अल्लाह तआला ने निश्चित किया है, इसलिए अल्लाह तआला का इरशाद है: (अनुवादः अल्लाह की दी हुई क़ाबिलियत की पैरवी कर जिस पर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया है, अल्लाह की इस पैदा की हुई चीज़ को जिस पर आदमियों का पैदा किया बदलना न चाहिए, पस सीधा दीन यही है)।

अल्लाह तआला ने इन्सान को हुक्म दिया है कि वो खुदा से मुहब्बत करे और उसके रसूल से मुहब्बत करे, इसलिए खुदावन्द कुद्दूस ने मोमिनों का गुण बयान करते हुए फ़रमाया है: (अनुवादः जो लोग मोमिन हैं उनको अल्लाह तआला के साथ बहुत ही मुहब्बत है)।

एक दूसरी जगह खुदा ने मुहब्बत के सिलसिले में अपने दावा की सेहत पर दलील देने वाली एक दूसरी आयत हुज़ूर अकरम सल्ल0 की तरफ से इरशाद फ़रमाई है कि: (अनुवाद : अगर तुम लोग अल्लाह तआला से मुहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो)।

लिहाज़ा हुज़ूर अकरम सल्ल0 की पैरवी करना ही अल्लाह की मुहब्बत का तरीक़ा घोषित किया जाता है। लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल0 की पैरवी उनसे मुहब्बत के बग़ैर आसान नहीं है। इसलिए नबी करीम सल्ल0 ने इरशाद फ़रमायाः (तुम में से कोई उस समय तक पूरा मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके निकट उसके वालिदैन, औलाद और सभी लोगों से अधिक महबूब न हो जाऊँ)। और इसी तरह आपने एक दुआ की ताकीद भी फ़रमायी है: (ख़ुदावन्द! मैं तुझ से तेरी मुहब्बत का तलबगार हूँ, और जो भी तुझ से मुहब्बत करता है और हर वो अमल जो मुझे तेरी मुहब्बत से क़रीब कर दे मैं उन सबका इच्छुक और तलबगार हूँ)।

इन्सान जब सच्ची और वाक़ई मुहब्बत करता है तो उसके लिए उन सभी कामों का पूरा करना आसान हो जाता है जो उसे साफ़

शेष पृष्ठ .....38 पर

आदर्श शासक

—नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

अरब साम्राज्य के शासक का आदेश पत्र उनके हाथ में आता है, उसमें लिखा होता है "अपना सारा सामान समेट कर तुरन्त मेरे सामने हाज़िर हो जाओ"। इसलिए हज़रत सईद बिन आमिर निकल पड़े। हज़रत सईद हिम्स के गवर्नर थे। हिम्स अरब महाद्वीप का बड़ा विकसित प्रदेश था। खेती–बारी ऊँचे पैमाने पर होती थी और व्यापार के लिहाज़ से भी इस प्रदेश को बड़ी अहमियत हासिल थी।

ख़ैर! बात हिम्स के गवर्नर की हो रही थी कि किसी ने उनकी शिकायत अरब साम्राज्य के महान सम्राट हज़रत उमर रज़ि0 से की कि "सईद बिन आमिर रज़ि0 का रुझान दुनिया की ओर हो गया है, ज़रा उनकी ख़बर लें।" अलीरुल मुमेनीन हज़रत उमर रज़ि0 शासन और सत्ता को अल्लाह की अमानत समझते थे और यही बात अपने गवर्नर के मन में बैठाते थे।

वह अल्लाह के बन्दे सईद भी उनके ही जैसे थे। और शासकों को ऐसा ही होना चाहिए। उन्हें अपना आदर्श हज़रत अबूबक्र या हज़रत उमर रज़ि0 जैसे लोगों को बनाना चाहिए। ये बात सदैव शासक–प्रशासक को याद रखनी चाहिए कि अल्लाह शासन की लापरवाहियों को कभी क्षमा नहीं करता। जिनको वह पावर देता है उनका हिसाब–किताब भी जम कर लेता है।

हिम्स के गवर्नर आदेश पत्र मिलने के पश्चात मदीने पहुँच कर मस्जिदे नबवी में प्रवेश करते हैं। उस दौर में मस्जिद ही मुसलमानों की पार्लियामेन्ट थी। अरे! मैं तो भूल ही गया, जरा उस हिम्स के गवर्नर का शाही ठाठ–बाट और हाल हुलिया तो देखिये! लोग दंग रह जाएंगे जब सुनेंगे कि वह हिम्स का गवर्नर मस्जिदे नबवी में दाखिल होता है तो उसके शरीर पर पैवेन्द लगे फटे–पुराने कपड़े होते हैं, कन्धे पर एक लाठी होती है जिससे एक गठरी लटकी हुई होती है। अल्लाह का ये बन्दा हज़रत उमर रज़ि0 को सलाम करके बैठ जाता है।

और फिर तुरन्त सवाल–जवाब का दौर शुरु होता है। हज़रत उमर रज़ि0 पूछते हैं, पत्र मिलते ही तुरन्त चल पड़े थे? सईद ने कहा, जी हाँ! फिर इतनी देरी क्यों हुई? कहा, पैदल आया हूँ। पूछा क्या घोड़ा, गधा, खच्चर कुछ भी पास न था? जवाब मिला जी नहीं! समय–समय की बात है। परिभाषाएं बदल जाती हैं। आज यही प्रश्न उस दौर के उमर के बजाये आज के अमर करते और उसका उत्तर उस दौर के सईद के बजाये आज के संदीप देते तो यूँ देते कि :–

अमर– हमने इतनी लम्बी अवधि तक तुम्हें उस बड़े पद पर रखा कि अवाम का खून चूसो किन्तु इस अवधि में तुमने एक रॉयल इन्फील्ड, एफ0जेड अथवा मर्सीडीज नहीं पैदा कर ली?

संदीप– *साहब को भगवान खुश रखे,* रायल इन्फील्ड तो मैंने अपने गाँव के फार्म हाउस में रख रखी है। एफ0जेड तो हमारे बेटे चलाते हैं और मर्सीडीज तो मैं स्वयं चलाता हूँ, दरअस्ल मुझे आने में

देरी इसलिए हुई कि आप भी रात के राजा मैं भी रात का राजा।

खैर! लोगों ने हज़रत सईद रज़ि0 की शिकायत ये की कि–

1. जब तक अच्छा ख़ासा दिन नहीं चढ़ आता उस समय तक वह घर से बाहर नहीं आते।
2. रात में किसी के पुकारने पर उत्तर नहीं देते।
3. महीने में एक दिन एकदम ही घर से नहीं निकलते।

हालांकि हज़रत उमर रज़ि0 को जनता की इन शिकायतों पर बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतना भला और सदाचारी तथा जनता की सेवा में तत्पर रहने वाला व्यक्ति जनता के प्रति लापरवाह कैसे हो सकता है। लेकिन शिकायत आ चुकी थी। अतः सईद रज़ि0 को तलब किया गया और लोगों से पूछा गया, अब कहो तुम्हारी उनसे क्या शिकायतें हैं? लोगों ने कहा जब तक अच्छा ख़ासा दिन नहीं चढ़ आता वह घर से बाहर नहीं निकलते। हज़रत उमर रज़ि0 ने पूछा ऐ सईद! तुम्हारे पास इसका क्या जवाब है? सईद रज़ि0 ने कहा, खुदा की कसम! मैं इस राज़ को राज़ ही रहा देना चाहता था लेकिन अब कोई चारा नहीं, अतः सुनिये, बात ये है कि मेरे घर में कोई नौकर नहीं है, जो घर में कामों में मदद करे, पत्नी के लिए समस्त कार्य निपटाना सम्भव नही है, इसलिए मैं सुबह जब घर जाता हूँ तो आटा गूँधता हूँ, फिर ख़मीर उठने की प्रतीक्षा करता हूँ, उसके बाद रोटी पकाता हूँ, फिर हाथ–मुँह धो कर जनता की सेवा हेतु बाहर निकलता हूँ।

उत्तर सुनने के पश्चात दूसरी शिकायत का जवाब तलब किया गया कि रात में किसी के पुकारने पर उत्तर नहीं देते, तो उन्होंने कहा कि मैं इस बात को भी बताना नही चाहता लेकिन खैर! वास्तविकता यही है कि मैंने दिन को जनता की सेवा हेतु समर्पित कर रखा है और रात अपने पालनहार को। अतः जब रात आती है तो जनता की आवश्यकताओं को निपटाकर इशा की नमाज़ के बाद घर के अन्दर चला जाता हूँ और अपने मालिक के सामने खड़ा हो जाता हूँ।

लोगों ने तीसरी शिकायत रखी की महीने में एक दिन बिल्कुल घर से बाहर नहीं निकलते। इस पर हज़रत उमर रज़ि0 ने उनसे इसका जवाब तलब किया तो सईद रज़ि0 ने कहा कि दरअस्ल मेरे पास एक कपड़े के अतिरिक्त दूसरा कपड़ा नहीं है, जिसे मैं मैला होने के पश्चात बदल लिया करुं, न मेरे पास कोई सेवक है जो मेरे कपड़े धो दिया करे, इसी कारण जब वह बहुत मैले हो जाते हैं तो उन्हें उतार कर स्वयं धोता हूँ, जब सूख जाते हैं तो पहन कर बाहर निकलता हूँ, इस काम में दिन का बड़ा भाग बीत जाता है।

उपरोक्त उत्तर सुन कर हज़रत उमर रज़ि0 का मुखड़ा हर्ष से चमक उठा और चहकते हुए कहने लगे कि अल्लाह का शुक्र है कि उसने मेरी सूझ–बूझ इनके बारे में ग़लत नही की।

शिकायतें ग़लत भी होती हैं सही भी। इसलिए प्रशासक का कार्य है कि वह उसकी जाँच करे, और निष्पक्षता से करे। जाँच–पड़ताल इस्लाम का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है और अनुभव व इतिहास बताता है कि वह शासन प्रणाली सदैव अच्छी रही है जिसमें जवाब तलब और जाँच–पड़ताल तथा हिसाब–किताब का दरवाजा खुला हो। ❑❑

अच्छे लोगों की संगत और उसका प्रभाव

—मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी अनु0—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

जमा करने की चीज़ क्या है

हज़रत सौबान रज़ि0 कहते हैं कि जब ये आयत उतरी, अनुवादः "जो लोग सोना और चाँदी को इकट्ठा करते हैं"। आयत के उतरने के वक्त हम लोग सफर में थे। कुछ सहाबा रज़ि0 ने कहा कि ये आयत तो सोना–चाँदी के बारे में उतरी है यदि हमको मालूम हो जाए कि कौन सा माल अच्छा है जिसको हम जमा कर सकते हैं तो हम वही माल जमा किया करें, तो आप सल्ल0 ने कहा कि सबसे बढ़िया जमा करने की चीज़ ऐसी ज़बान है जो ज़िक्र करने वाली हो, ऐसा दिल है जो शुक्र करने वाला हो, और ऐसी पत्नी है जो ईमान में उसका सहयोग करने वाली हो। ख़राब बीवी होगी तो आप भी परेशान, घर वाले भी परेशान। जो आजकल हर जगह हो रहा है। इसीलिए कि महिलाओं को दीक्षा (तरबियत) देते नही हैं और लड़की के दिल व दिमाग़ में वही सारी बातें होती हैं। रस्मो रिवाज़ की, पैसे की, तो उसके नतीजे में सब परेशान। इसलिए आप सल्ल0 ने कहा "औरत से चार चीज़ों की वजह से शादी की जाती है"। माल का सबसे पहले ज़िक्र किया। आजकल देख लीजिए, जहेज़ और माल कहाँ ज़्यादा मिलेगा उसी को वरीयता देते हैं। इसलिएँ उसको पहले नम्बर पर रखा। दूसरे नम्बर पर वंश को रखा। बहुत ऊँचे ख़ानदान की है, बड़े पैसे वाले की बेटी है। मशहूर ख़ानदान की लड़की है। तीसरे ये कि बहुत खूबसूरत है, उसकी खूबसूरती देखकर घर में लाना चाहते हैं और अंत में बेचारा दीन (धर्म) आता है कि दीनदार है तो लाना चाहिए।

हालांकि आप सल्ल0 ने कहा कि दीन वाली को लेकर आओ और कामयाब हो जाओ। मज़े रहेंगे। धन–दौलत, रूप–सौन्दर्य ये सब तो ज़ाहिरी हैं और सब ख़त्म हो जाने वाला है। दीनदारी बड़ी मुश्किल से मिलेगी। लेकिन अगर मिल जाएगी तो मज़े ही रहेगे। यूं कहा जाए कि पाँचों उंगलियां घी में और सर कढ़ाई में। घर में बरकत ही बरकत रहेगी। और फिर पूरा घर जन्नत का नमूना बन जाएगा। नेक बीवी आ गई तो पूरा घर संवर जाएगा और अगर बुरी बीवी आ गई तो पूरा घर बर्बाद हो जाएगा। उसमें बड़ी एहतियात करनी चाहिए। आमतौर पर लोग पैसा देखते हैं फिर कुछ नहीं देखते। या देखते हैं तो किसी का चेहरा देखकर प्रभावित हो गए। किसी का घराना देख कर प्रभावित हो गए। ये नहीं देखते कि नमाज़ पढ़ती है कि नही। आस्था (अक़ीदा) सही है कि नहीं। ये देखने की चीज़ है, उन्हें देखा ही नहीं जा रहा है। और जो देखने की नहीं है उनको खूब देखा जा रहा है। दुनिया की मुहब्बत में अच्छे–अच्छे लोग गिरफ्तार हैं।

दुनिया की मुहब्बत हर बुराई की जड़ है– हदीस में है कि "दुनिया की मुहब्बत हर बुराई की जड़ है"। असल बात ये है कि दुनिया की मुहब्बत निकल जाए। दुनिया की मुहब्बत अल्लाह के ज़िक्र से निकलती है। इसलिए कहा गया है कि कसरत से ज़िक्र करो। वर्ना आजकल सारे दिल दुनिया की मुहब्बत में चूर हैं। और उसके कारण परेशान हैं। चाहे बूढ़ा हो, चाहे जवान हो, यहाँ तक कि जो धार्मिक छात्र होते हैं और अपनी शिक्षा पूर्ण

कर धार्मिक कार्य करना चाहते हैं उनके भी माता–पिता उनके पीछे पड़े रहते हैं कि कमा कर दो। कितने बेचारे आ कर शिकायत करते हैं कि हम क्या करें, माँ–बाप परेशान करते हैं कि ज़्यादा पैसा कमाकर लाओ, हम नहीं जानते कि कहाँ से लाओ, हमको बस पैसा चाहिये। और इसीलिए कितने लोग मज़हबी पढ़ाई पढ़ाते ही नहीं। जो लोग जाहिल हैं या मामूली किसान हैं, वह तो बेचारे किसी काम के नहीं, न रोटी मिलती है न दीन मिलता है। भैंस चराने में लगा दिया। किसी मामूली काम पर बैठा दिया। 15 रूपये दिन भर में लाकर देता है। बस उसी में मग्न हैं। जब सांसारिक प्रेम मन–मस्तिष्क पर छा जाता है तो फिर बड़े हों या छोटे, बस मामला ये होता है कि रूपये का अन्तर होता है।

एक बड़े धार्मिक विद्वान कहते हैं कि हम गोमती नदी के पुल पर खड़े थे कि हमारे पास एक बुज़ुर्ग आए, उन्होंने कहा कि देखो! ये आदमी जा रहा है, किस चीज़ से जा रहा है? साइकिल से। ये कौन है? आदमी है। दूसरा मोटर साइकिल से गुज़रा तो वह कहने लगे कि नहीं! ये दो रूपया जा रहा है, ये पाँच रूपया जा रहा है, ये दस रूपया जा रहा है। कुछ पाँच में खुश हैं, कुछ दस में खुश हैं, कुछ दस हज़ार में खुश हैं, कुछ को दस लाख चाहिये। लेकिन सोच एक ही है, चाहे बड़े सेठ हों या अदना दरजे का बीड़ी पीने वाला आदमी हो, सब का दिल, दिमाग़ बस डूबा हुआ है पैसे में। इसीलिए आप सल्ल0 ने कहा कि दीन (धर्म) में अपने से ऊपर वाले को देखो और दुनिया में अपने से नीचे वाले को देखो। अगर दुनिया के बारे में ऊपर वाले को देखोगे तो अल्लाह की नेअमत की नाकद्री करोगे। आमतौर पर मामला उल्टा है। लोग दीन (धर्म) में तो नीचे वाले को देखते हैं। कहते हैं कि अरे वो भी तो नमाज़ नहीं पढ़ते, वह भी तरावीह नहीं पढ़ते। अरे! वह नहीं पढ़ते तो तुम तो पढ़ो। उसमें अपने से नीचे वाले को देखेंगे, और दुनिया के मामले में ऊपर वाले को देखेंगे कि फलां मोटर से चल रहा है, उसका घर बन गया है और हम अभी तक कोठरी में रह रहे हैं। उसका परिणाम ये होता है कि खुद भी परेशान और दूसरे भी परेशान। इस प्रकार हर समय परेशान रहेगा और न जाने किन–किन रोगों से ग्रस्त रहेगा। इसलिए अच्छों की संगत में जब आदमी रहता है तो उसका दिल अच्छा हो जाता है। दुनिया की मुहब्बत निकल जाती है और अच्छा वही है जिसके दिल में दुनिया की मुहब्बत न हो।

अल्लाह वालों की निशानी है। झूट न बोलता हो, नमाज़ की पाबन्दी करता हो, मोटी–मोटी निशानी है इसलिए पहचानना आसान है।

सबसे पहले देख लें कि झूट तो नहीं बोलता, नमाज़ की पाबन्दी करता है की नही। और तीसरी चीज़ अपनी ख़्वाहिश के चक्कर में तो नहीं पड़ा रहता है। खाना, कपड़ा, पैसा बस उसी की चिन्ता में या शोहरत के चक्कर में तो नहीं रहता है।

अल्लाह के जो नेक बन्दे होते हैं, उनको पैसे की परवाह नहीं होती है। सोने का बिस्कुट और मिट्टी का ठेकरा दोनों बराबर हो जाते हैं। पैसे उनके पास आता है, लेकिन सब बाँट देते हैं, न शोहरत के लिए भागते हैं न शोहरत के जुगाड़ में लगे रहते हैं। इसलिए बस अल्लाह के नेक बन्दों की संगत की चिन्ता करनी चाहिए।

और उसी संगत की बरकतों के लिए हमारी पूरी व्यवस्था को सामूहिकता के साथ संबद्ध कर दिया गया है, क्योंकि समूह में हर व्यक्ति को दूसरे से फाएदा पहुँचता है। इस सामूहिकता का एक सुन्दर रूप नमाज़ बा जमाअत है।

शेष पृष्ठ .....31 पर

बकरी वाली बड़ी बी का हज

(हज=हज्ज)

—इदारा

यह उस काल की बात है जब भारत में न रेल की पटरियाँ थीं न रेल गाड़ियाँ, न डामर रोड थी न बस मोटर की सर्विस, पन्द्रह बैल गाड़ियों का एक काफिला (यात्री दल) पूर्वी पंजाब से कराची जा रहा था, इस काफिले का रास्ता एक हल्के जंगल के बीच था, इस जंगल में आस पास के गाँव के लोग अपने जानवर चराने के लिए लाते थे। जिस समय काफिला जंगल के रास्ते से गुज़र रहा था वहाँ एक बड़ी बी (बूढ़ी स्त्री) लगभग 20 बकरियाँ चरा रही थीं, उन्होंने इससे पहले इतनी गाड़ियों का काफिला न देखा था, उनको बहुत आश्चर्य हुआ, बैल गाड़ियों पर औरतें भी थीं और मर्द भी। बड़ी बी एक गाड़ी के पास आईं और पूछा, आप लोग कहां जा रहे हैं? एक ख़ातून ने जवाब दिया, अल्लाह के घर जा रहे हैं, बड़ी बी पर जुमले का अजीब असर पड़ा, वह गाड़ियों के साथ चलने लगीं, पिछली गाड़ी वालों से फिर पूछा, आप लोग कहाँ जा रहे हैं? उस गाड़ी से भी एक खातून ने जवाब दिया, हम लोग अल्लाह के घर का हज करनें जा रहे हैं। बड़ी बी ने कहा, हम भी अल्लाह के घर चलेंगे, हमको लेते चलो, खातून ने कहा अम्मा जी! हम लोग हज करने जा रहे हैं, इसमें बड़ा वक़्त लगता है और बहुत खर्च होता है, तुम तो अपने घर जाओ। मगर बड़ी बी गाड़ियों के साथ चलती रहीं और हर एक से यही कहती रहीं कि मुझे भी लेते चलो, जब काफिले वालों ने देखा कि बड़ी बी दो तीन कोस तक इसी तरह चलती रहीं तो एक खातून ने तरस खा कर बड़ी बी से गाड़ी पर सवार होने को कहा, अब बड़ी बी ने सवार होने से इन्कार कर दिया, अब वह बराबर काफिले के साथ पैदल चल रही थीं और कह रही थी कि अल्लाह के घर जा रही हूँ, अलबत्ता जहाँ काफिला रुकता वह भी रुकतीं सब के साथ आराम करतीं, ज़रूरियात से फारिग होतीं और काफिले वाले खाना पेश करते तो खाना लेकर खा लेतीं। लम्बा रास्ता तै करने के बाद एक बहेली पर सवार होने को राजी हुई और सवार हुईं।

बड़ी बी बकरियों को भुला कर अल्लाह के घर को चल दीं, बकरियाँ चरती रहीं, शाम हुई तो अल्लाह के हुक्म से हस्बे आदत घर पहुँच गईं, सूरज डूब चुका था, बड़ी बी के इक्लौते बेटे ने देखा कि बकरियाँ तो आईं मगर अम्मा न आईं। घबरा गया, पड़ोसियों को बताया, तीन–चार जवानों के साथ लालटेनें और डन्डे लेकर बेटा जंगल पहुँचा, बेटा अम्मा! अम्मा! पुकारता और तलाश करता, मगर अम्मा का कहीं पता न चला। सबने कहा इस छोटे जंगल में भेड़िया तो आता न था मगर आज आ गया होगा और बड़ी बी को खा गया होगा। दिन में ढूँढा जाएगा तो उनकी लठिया, कपड़े और हड्डियां मिलेगीं। बेटा आँसू बहाता लोगों के साथ वापस हो गया। रात गुजार दी, सुब्ह को फिर कई लोगों के साथ जंगल गया, चप्पा–चप्पा ढूँढ़ डाला, कहीं कोई निशानी न मिली। अब सब्र के सिवा कोई चारा न था, लोगों ने बड़ी बी के लिए दुआए मग्फ़िरत की।

काफिला कराची के करीब पहुँच रहा था, हर गाड़ी पर बड़ी बी के बारे में गुफ्तगू चल रही थी। कोई कहता देखो अल्लाह क्या करता है? कोई कहता अरे कराची में कोई

अल्लाह का बन्दा बड़ी बी को अपने घर ले जाएगा और अपने बच्चों की देख रेख के लिए रख लेगा।

काफिला कराची पहुँचा, इस साल हाजी कम थे, जहाज की सीटें पूरी नही हो रही थीं, इस सबब से जहाज़ के जिम्मेदारों ने पर हाजी किराया लेने से इन्कार कर दिया और फिक्स रकम पर जहाज़ ले जाने का एलान कर दिया, मजबूरन सब हाजियों ने उनकी मतलूब रकम अदा की। अब बड़ी बी के जहाज़ पर सवार होने में कोई रुकावट न थी। इस तरह बड़ी बी भी हाजियों के साथ रवाना हो गईं और हाजियों के साथ खाते पीते जद्दा पहुँच गईं, मीकात पर औरतों ने एहराम की नीयत करवा कर लब्बैक कहलवा दिया था। सबके साथ किसी तरह मक्का पहुँची, दूसरी औरतों के साथ उनको देख–देख कर उम्रा किया। फिर 8 जिलहिज्ज को हज का एहराम बाँध कर काफिले के साथ मिना पहुँच गई। 9 को सबके साथ अरफात पहुँच गईं, लेकिन भीड़ के सबब वहाँ काफिले से बिछुड़ गईं, काफिले वालों ने बहुत ढूँढा न मिलीं, वह दूसरे लोगों के साथ मुजदलफा आईं और रात गुजार कर मिना आईं। किसी ने बे सहारा देख कर खाना वगैरह खिला दिया।

पश्चिमी यू0पी0 का एक खानदान हज करने गया था, जिसमें एक साहब अपनी बीवी और दो बहनों के साथ थे। अल्लाह की मरजी तवाफे ज़ियारत के बाद उनकी एक बहन की तबीअत अचानक ज़्यादा खराब हुई और वह अल्लाह को प्यारी हो गईं। अब इन लोगों को फिक्र हुई कि मदीने के सफर में ऊँट के कजावे में उनकी बहन के साथ कौन बैठेगा? अल्लाह का करना यह कि बड़ी बी अपने साथियों से बिछड़ी रोती हुई नज़र आईं। मरहूमा हज्जिन की बहन ने उनको बुलाया और हाल पूछा, अपने मुल्क और इलाके की पाकर बहुत खुश हुईं, भाई से कहा, इनको बहन की जगह ले लो, भाई ने मंजूर किया, उनसे तवाफे ज़ियारत कराया और बकिया अरकान पूरे कराये, उनकी तरफ से कुर्बानी की और साथ में मदीना तय्यिबा ले गये। हदियों तोहफों के साथ अपने साथ जहाज़ पर सवार करा कर कराची लाए। कराची से बैल गाड़ियों के जरिए अपने वतन रवाना हुए। रास्ते में जब वह जंगल आया, जहां बड़ी बी ने अपनी बकरियाँ छोड़ी थीं तो बड़ी बी ने इशारा करते हुए कहा, वह मेरा गाँव है, काफिले वालों ने बड़ी बी को हदाया व तहाइफ के साथ बड़ी बी के घर पहुँचाया, बेटा खोई हुई बूढ़ी माँ को पाकर फूले न समाया, गाँव के लोग बड़ी बी को देखने दौड़ पड़े। काफिला चन्द मिनट ठहर कर रवाना हो गया, बड़ी बी हफ्तों घर और गाँव वालों को अपनी कहानी सुनाती रहीं।

उधर वह काफिला जिस के साथ बड़ी बी गई थीं हज व जियारत के बाद कराची आया, वहाँ से बैल गाड़ी के काफिले के साथ रवाना हुआ और जब उस जंगल से गुजरा जहाँ बड़ी बी मिली थीं तो लोगों ने कहा, जंगल के करीब वाले गाँव चल कर बड़ी बी के बारे में मालूमात हासिल करना चाहिए, गाँव पहुँच कर जब पूछ ताछ की तो लोगों ने काफिले वालों को बड़ी बी के घर पहुँचा दिया। बड़ी बी फौरन घर से निकलीं और काफिले की औरतों को पहचान लिया। सबसे दौड़–दौड़ कर और खुशी के आँसू बहा कर गले मिलीं। फिर बेटे से कहा, हाजियों को शरबत पिलाओ, बेटे ने फौरन खाण्ड का शरबत तैयार करके पिलाया, सारे काफिले ने बड़ी बी के खो जाने और हज्जिन बन कर मिल जाने की कहानी बड़ी दिल चस्पी से सुना और आगे के लिए रवाना हुए।

शेष पृष्ठ .....35 पर

मुस्लिम समाज

—हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी —अनु0 मु0 अदील अख़्तर

लोगों के साथ सद्व्यवहार और प्रेम भाव के साथ रहने से कोई मानव समाज जंगल के मुआशरे से बरतर और बेहतर बनता है, इसलिए बुद्धिजीवी वर्ग को अपने मुआशरे की बेहतरी के लिए इस्लामी तअलीमात के प्रमाणिक भण्डार में समाजी जिन्दगी के मुख़्तलिफ पहलुओं पर खास मवाद मिलता है, हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्ल0 ने तालीमो तरबियत का कोई अहम पहलू नहीं छोड़ा है, सबके लिए वाज़ेह हिदायत दी है और इस तरह इन्सानों की समाजी जिन्दगी को साफ–सुथरा और शाईस्ता बनाने की कोशिश की है। आप की यह कोशिश केवल दिशा–निर्देश तक सीमित नही रही बल्कि इन्सानों के जिस मुआशरे से हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को प्रत्यक्ष रूप से वास्ता पड़ा आपने उसकी अमलन तरबियत फरमाई, और यह तरबियत बे मिसाल साबित हुई। पूरी इन्सानी तारीख़ में इस मुआशरे से अच्छा मुआशरा आज तक कायम न हो सका और आइन्दा भी इस की आशा नही। यह वह मुआशरा है कि कम से कम मुस्लिम मुआशरों पर उस की नकल करने की कोशिश करना रहती दुनिया तक अनिवार्य है, बल्कि यह मुआशरा तमाम इन्सानी मुआशरों के लिए भी आदर्श और कसौटी है। गैर मुस्लिम मुआशरे भी अगर उस पर अमल करने की कोशिश करें तो उसके लाभदायक परिणाम का वह भी अनुभव कर सकते हैं।

हुज़ूरे अकरम सल्ल0 ने समाजी तअल्लुकातो मुआमलात के तमाम काबिले अमल पहलुओं की सुधार पर जोर दिया है और इतना जोर दिया है कि उनकी फज़ीलत या ख़राबी, मज़हब, मज़हबी खूबी या खराबी से भी ज़्यादा बताई गई है, और आप सल्ल0 के उपदेशों से यह ज़ाहिर होता है कि अगर उनमें कमज़ोरी है तो इबादत में ज़्यादती भी काम नहीं आ सकती बल्कि वह नष्ट हो जाती है।

❑❑

दीन

दीन तुम उस को कहो,
जिस से मिले रब की रज़ा,
जिसको लेकर आए हैं,
हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा,
ग़ैर की ईजाद हरगिज़,
दीन हो सकता नहीं,
जो नार है शैतान की,
वह नूर हो सकता नहीं,
बद बख़्त है महरूम हैं,
और है बेशक शक़ी,
दीन कामिल में जिसे,
आए नज़र कोई कमी,
दीने कामिल हो चुका,
कुर्आन में है यह लिखा,
बिदअतें सब हैं ज़लालत,
है नबी ने यह कहा,
लाखों दुरूद और सलाम,
अल्लाह के रसूल पर,
सब आल पर अस्हाब पर,
जुर्रीयते रसूल पर,

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ़्ती मुहम्मद जफ़र आलम नदवी

प्रश्नः रमल क्या है? इसे समझाइये।

उत्तरः हज करने वाले या उम्रा करने वाले का वह तवाफ जो एहराम की चादरों के साथ किया जाता है और उसके बाद सई भी करनी होती है, उसको तवाफ के तीन चक्करों में जरा झपट कर हल्की दौड़ से चलना चाहिए, अगर भीड़ के सबब ऐसा न कर सके तो कुछ अकड़–अकड़ ही चलें इसी को रमल कहते हैं, यह मर्दों के लिए सुन्नत है और औरतों के लिए नहीं, यह सुन्नत छूट जाए तो कोई जुर्माना नहीं है। इसका मौक़ा उम्रे का तवाफ है, या वह तवाफे जियारत जिसमें एहराम की चादरें न उतारी गई हों।

किसी ने उम्रा पूरा कर लिया लेकिन अभी एहराम की चादरें नहीं उतारी मगर तवाफ का फिर *मौक़ा मिल गया* तो इस में रमल नहीं है। दूसरे तमाम नफ्ल में रमल नहीं है।

प्रश्नः इज़्तिबाअ किसे कहते हैं?

उत्तरः जिन तवाफों में रमल है उनमें इज़्तिबाअ भी सुन्नत है। इज़्तिबाअ यह है कि एहराम की ऊपर वाली चादर इस तरह ओढ़े कि सर तो खुला रहे मगर चादर का दाहिना हिस्सा दाहिने काँधे के नीचे से (यानि बगल से) निकाल कर बाएं काँधे पर डाले, इसको इज़्तिबाअ कहते हैं। यह भी सिर्फ मर्दों के लिए है, याद रहे! रमल सिर्फ तीन चक्करों में है, जब कि इज़्तिबाअ सातों चक्करों में है।

प्रश्नः कुछ लोग एहराम की ऊपर वाली चादर इस तरह ओढ़ते हैं कि हर वक्त इज़्तिबाअ की सूरत रहती है इसका क्या हुक्म है?

उत्तरः ऐसा करना ग़लत है मगर कोई गुनाह नही है, मगर इस हाल में नमाज़ अदा करना कि शाना (कंधा) खुला रहे मक्रूह है।

प्रश्नः किसी औरत को अगर मीकात से पहले हैज़ आ जाए तो क्या करे?

उत्तरः वह मीकात पर नहा धोकर साफ कपड़े पहन ले, नमाज़ पढ़े बिना उम्रा या हज जिस नीयत से जा रही हो उसकी नीयत करके तलबिया पढ़ ले, अब वह एहराम में आ गई, एहराम की सारी पाबन्दियां करे मगर न नमाज़ पढ़े न किसी मस्जिद में दाखिल हो, मक्का मुकर्रमा पहुँच कर पाक होने का इन्तिजार करे, पाक होने पर नहा–धो कर कपड़े बदले, उसका एहराम बाकी है, अब वह उम्रा पूरा करे।

अगर हज का एहराम हो तो मिना चली जाए, तलबिया, की कसरत रखे, ज़िक्र व दुआ में मशगूल रहे, नमाज़ न पढ़े, अरफात जाए वहां भी खूब दुआएं करे, तलबिया पढ़े, मुजदलफा जाए वहाँ भी खूब दुआएं करे, मिना आए यहाँ रमी करे, कुर्बानी करे, एक अंगुल बाल काट कर एहराम से बाहर आए, अब तक अगर पाक नहीं हुई है तो पाक होने का इन्तिजार करे, ग्यारह बारह की रमी इसी हाल में कर सकती है, जब ज़माना पूरा हो जाए, नहा–धो कर कपड़े बदल कर जियारत वाला तवाफ पूरा करे। पाक होकर तवाफे जियारत किये बिना हज न होगा। तवाफे जियारत किये बिना अगर सफर करके चली गई तो अपने लिए बड़ी मुश्किल पैदा कर ली, इसको मुफ्ती हज़रात से समझे और तवाफे जियारत और तवाफे वदाअ किये बिना मक्का मुकर्रमा हरगिज न छोड़े।

प्रश्नः हिन्दू धर्म में एक शख्सियत प्रह्लाद नाम की मशहूर है, कहते हैं कि वह ईश भक्त थे, उनके पिता ने ख़ुदाई दावा किया था। प्रह्लाद बचपन ही से ईश भक्ति में लीन थे। जब वह जवान हुए तो पिता ने उनको इससे रोका परन्तु वह अपने विश्वास में दृढ़ रहे, बाप ने नाना प्रकार की यातनाएं दीं, परन्तु वह दृढ़ रहे और उनको कोई हानि न पहुँची। अन्ततः बाप ने उनको आग का अलाव जला कर उसमें डलवा दिया, परन्तु प्रह्लाद को आग जला न सकी, इस प्रकार की यह लम्बी कहानी है क्या यह इब्राहीम अलैहिस्सलाम की घटना तो नहीं है? जिसे बाद में अदल–बदल कर पुराणों में लिख दिया गया। इसी प्रकार श्री कृष्ण की घटना बताया गया कि कंस के न चाहते हुए भी श्री कृष्ण जीवित रहे, उनके पिता उनको लेकर नदी पार कर गये, कहीं यह मूसा अ0 तो नहीं हैं कि फिरऔन के न चाहने पर भी वह जीवित रहे, वह समुद्र पार कर गये जब कि फिरऔन उसी में अपनी सेना के साथ डूब कर मर गया। अभी एक पुस्तिका छपी है, उसमें साफ लिखा है कि प्रह्लाद अर्थात इब्राहीम अ0 तथा श्री कृष्ण अर्थात मूसा अ0 हैं, कृपया इस पर प्रकाश डालिए।

उत्तरः पुराणों में प्रह्लाद का उल्लेख मिलता है, पुराण सनातन धर्मी हिन्दुओं की पुरानी किताबें है, जिनको आर्य समाजी नहीं मानते। कुछ भी हो पुराणों का हिन्दु धर्म में एक स्थान है। लगता है प्रह्लाद भी कोई ईश भक्त महापुरुष थे, परन्तु जिस प्रकार का जो कहानी प्रस्तुत की गई है उसमें बहुत कुछ मिलावट लगती है, उसमें बताया गया है कि प्रह्लाद राम की रट लगाते थे और राम भक्त थे, जब कि राम ईश्वर नहीं राजा दशरथ के बेटे थे, जैसा कि रामायण में लिखा है, चूंकि सनातन धर्मी राम को खुदा (ईश्वर) का अवतार मानते हैं, इसलिए अवतार वाद को सिद्ध करने के लिए या तो प्रह्लाद की कहानी गढ़ी गई या वास्तविक कहानी बदल दी गई, इसी के साथ ही नरसिंहा अवतार भी जुड़ा हुआ है अर्थात इस एक कहानी में दो अवतारों की पुष्टि की गई है। इस्लाम की शिक्षा के अनुसार अवतार का अकीदा बिल्कुल गलत है। खुद हिन्दुओं का एक शिक्षित वर्ग आर्य समाजी अवतारवाद को नही मानता। अतः इसको इब्राहीम अ0 से जोड़ना केवल पथ भ्रष्टता है। उनको आग में डाले जाने की घटना बाबुल (ईराक़) कल्दानिया की है, फिर वहाँ से हिजरत करके शाम गये। प्रह्लाद की गढ़ी और बिगड़ी कहानी भारत की है, इसे इब्राहीम अ0 से जोड़ना किसी प्रकार शुद्ध नहीं है। इब्राहीम अ0 की निशानियों में बैतुल मुक़द्दस और मक्के का काबा है, प्रह्लाद को उससे कैसे जोड़ेंगे?

इसी प्रकार श्री कृष्ण के विषय में महाभारत आदि में जो उल्लेख मिलता है, वह मथुरा और गोकुल का क्षेत्र है, श्री कृष्ण के पिता का नाम वासुदेव और उनके मामा का नाम कंस था, राधा उनकी प्रेमिका थी। महाभारत युद्ध में उन का बड़ा योगदान है। गीता अर्जुन और श्री कृष्ण की बात चीत में हिन्दू धर्म का दर्शन है। इस कहानी को मूसा अ0 और फिरऔन से कैसे जोड़ा जा सकता है? उनकी घटना तो मिस्र तथा मदयन से जुड़ी है। तौरेत और गीता में कोई सम्बन्ध नहीं है। मूसा अ0 ने हजरत शुऐब अ0 की बकरियां दस बरस तक चराई। बनी इस्राइल और गोकुल के लोगों में क्या अनुकूलता है, हम कह सकते हैं कि श्री कृष्ण कोई समाज सुधारक महापुरुष हुए होंगे, यह

भी कह सकते हैं कि वह अल्लाह के नबी रहे होंगे, रसूल रहे होंगे, लेकिन अवतारवादियों ने उनकी शिक्षाएं लुप्त करके उनको अवतार सिद्ध करने के लिए एक कहानी गढ़ ली। इस सब को तो माना जा सकता है परन्तु मथुरा के श्री कृष्ण को मिस्र व मदयन वाले मूसा कहना लोगों को पथ भ्रष्ट करना है।

कुछ लोगों का कहना है कि इस प्रकार की बात–चीत से प्रह्लाद तथा श्री कृष्ण को मानने वाले हम से जुडेंगे, फिर हम उनको सत्य धर्म की ओर बुलाएंगे, यह केवल धोखा है, लोगों को अपने से मानूस करने के लिए इस्लामी अख्लाक अपनाएं, पहले के बुजुर्ग जैसे शैख मुईनुद्दीन चिश्ती रह0 द्वारा लाखों लोग इस्लाम में दाखिल हुए, उन लोगों ने यह तरीका नही अपनाया, आप पता लगाएं कि सारी दुनिया में जो आज इस्लाम पहुँचा हुआ है क्या हर देश में इसी विधि से इस्लाम पहुँचा? कदापि नही। इस्लाम ने पहले अपने अख़्लाक़ से लोगों के दिल मोह लिए, फिर लोग इन अख़्लाक़ के शिक्षक हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के प्रेमी बन गए और उन पर ईमान लाने पर विवश हुए और फिर इस्लाम की सत्यता से सुसज्जित हो गए, यही तरीका अपनाना लाभदायक होगा।

प्रश्नः मस्जिदे हराम किसे कहते हैं?

उत्तरः मक्का मुकर्रमा में अल्लाह का घर काबा है, उसके गिर्द दीवारों से घेर कर जो मस्जिद बनाई गई है उसको मस्जिदे हराम या हरम की मस्जिद कहते हैं।

प्रश्नः अल्लाह का घर (बैतुल्लाह) काबा से क्या तात्पर्य है?

उत्तरः मक्का मुकर्रमा में एक जगह है, इसको दीवारों से घेर दिया गया है, अल्लाह ने उसकी तरफ मुहँ (सीना) करके नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया, उसके गिर्द चक्कर अर्थात तवाफ को इबादत बताया, माल और इस्तिताअत (सामर्थ्य) रखने वाले मुसलमानों पर ज़िन्दगी में एक बार उसका हज फर्ज़ किया है, उसको अपना घर (बैतुल्लाह) नाम दिया, इसलिए हम उसे अल्लाह का घर कहते हैं, यह मतलब हरगिज़ नही कि जिस तरह हम लोग अपने घरों में रहते हैं इस तरह वह उस घर में रहता है, हरगिज़ नहीं, अल्लाह जिस्म नहीं रखता, वह किसी जगह में घिर नहीं सकता, वह हर जगह अपने इल्म से मौजूद है, वह हमारे दिलों में इस माना में है कि उसकी मुहब्बत हमारे दिलों में है, उसका इख्तियार हमारे दिलों पर है। काबा अल्लाह का घर है, अर्थात उसकी दया, उसकी कृपा, उस जगह पर अत्यधिक है, उसकी तजल्ली (प्रकाश) अर्थात उसकी तवज्जुह उस स्थान पर अधिक है।

प्रश्नः हरम किसे कहते हैं?

उत्तरः धार्मिक परिभाषा में हरम की मस्जिद के चारों ओर एक निर्धारित स्थान है, उसके भीतर का पूरा क्षेत्र हरम कहलाता है। हरम अर्थात सम्मानित स्थान, हरम में कुछ कष्टदायक जीवों के अतिरिक्त किसी जीव को मारना निषेद्ध है, वहाँ आम तौर से हरम, हरम की मस्जिद को कहते हैं, हरम की मस्जिद, हरम के परिसर में है, इसलिए उसे हरम कहना गलत नहीं हैं परन्तु हरम का क्षेत्र हरम की मस्जिद से बहुत बड़ा है। मक्का जाने वाले हर मार्ग पर हरम की सीमा बताने वाले पत्थर तथा बोर्ड लगे हुए हैं। वहाँ की मुस्लिम सत्ता के लिए आवश्यक है कि वह गैर ईमान वाले को हरम की सीमा पार करके हरम में दाखिले से रोके। ❑❑

(देवनागरी लिपि में उर्दू)

हज़रात अहले बैत अतहार रज़ि० के फ़ज़ायल व हुक़ूक़

—खालिद फ़ैसल नदवी

अल्लाह तआला तो यही चाहते हैं कि तुम सब अहले बैत से हर किस्म की गंदगी को दूर कर दे और तुम्हें पूरी तरह पाक कर दे। (सूरः अहज़ाब—33)

हज़रात अहले बैत अतहार अल्लाह तआला की खुसूसी हिदायत याफ्ता और हज़रत रसूलुल्लाह सल्ल० के मिसाली तर्बियत करदा अफराद हैं, यही वजह है कि यह हज़रात मजीद इस्लाम के नकीब, कुर्आन मजीद के अमीन व पासबान, अहादीस के शारेह व तर्जुमान, सुन्नते नबवी के वारिस व मुबल्लिग, आला अख़लाक़ व किरदार के हामिल व दाई और हिम्मत व अज़ीमत, शुजाअत व हमिय्यत और हक़ गोई व बेबाकी के पैकर व अलमबरदार हैं। नीज़ इस्लाम की तब्लीग़ व ईशाअत के लिए सरगर्म व सरगरदां, जिहाद व क़िताल में तर्बियत के लिए फ़िक्रमन्द व कोशां, दुनिया व आखिरत में उम्मत की कामियाबी के ख़्वाहां व तालिब, उम्मते मुस्लिमा और ममालिक इस्लामिया की हिफाज़त व दिफा में हमेशा पेश पेश रहने वाले और इसमें सरफरोशाना और क़ायदाना हिस्सा लेने वाले हैं, इस्लामी तारीख़ इनकी मज़कूरह खुसूसियात और खिदमात की मुहाफिज़ व अमीन है।

आप सल्ल० की वफात से कर्बला तक, कर्बला से बालाकोट तक और बालाकोट से आज तक हज़राते अहले बैत अतहार की दावतो तब्लीग़, जिहाद व सरफरोशी और शहादते हक़ व ग़लबाये हक़ के सिलसिले में इन की खिदमात व कारनामों का ज़रीं सिलसिला क़ायम व दायम है और इन्शा अल्लाह कियामत तक इन की हमाजहत खिदमात जारी व सारी रहेगी, क्योंकि आप सल्ल० ने अपनी वफात के वक़्त सहाबा कराम से फरमाया की तुम्हारी हिदायत व रहनुमाई के लिए तुम्हारे दरमियान कुर्आन मजीद और अपने खानदान वालों को छोड़ रहा हूँ। हदीस शरीफ का मफहूम यह है कि "मैं तुम्हारे दर्मियान दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ, मेरे बाद जब तक तुम इन्हें पकड़े रहोगे, कभी गुमराह न होगे, एक चीज़ इनमें दूसरी चीज़ से अज़ीमतर है, वह अल्लह तआला की किताब (कुर्आन मजीद) है, और वह आसमान से ज़मीन तक फैली हुई अल्लाह तआला की रस्सी है और दूसरी चीज़ मेरी औलाद, मेरे घर वाले हैं। (तिर्मिज़ी) (यह रिवायत सहीह मुस्लिम में भी है)

अहले बैत कौन—कौन हैं—

यह हकीकत काबिले ज़िक्र है कि अहलेबैत नबवी में आप सल्ल० की अज़वाजे मुतह्हरात (जिन की तादाद) ग्यारह है। आप सल्ल० की जुर्रियाते तय्यबात (जिनकी तादाद) सात है। और बनू हाशिम की आल व औलाद सब ही शामिल हैं क्योंकि कुर्आन मजीद ने हज़रात अज़वाजे मुतह्हरात ही को अहले बैत कहा है। चुनांचे सुरहः अहज़ाब की आयत में मज़कूर "अहले बैत" का लफ्ज़ मुतह्हरात के लिए इस्तेमाल हुआ है और इसकी अव्वलीन मिसदाक़ हज़रात

अज़वाजे मुतह्हरात ही हैं। इस आयते करीमा का सयाक़ो सबाक भी इसी का मुताकाज़ी है। नीज़ कुर्आन मजीद की दीगर आयते करींमा सूरः हूद/37 और सूरः क़सस 12 में भी भी बीवी को अहले बैत कहा गया है और इस आयत के ज़ैल में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 का भी यही कौल मनकूल है कि ये आयते कुर्आनी अज़वाजे मुतह्हरात के हक़ में नाज़िल हुई है (फतहुल क़दीर 270/4) और दीगर अइम्म--ए--तफ़्सीर हज़रत अुरवह बिन ज़ुबैर, हज़रत इक्रिमा और हज़रत मकातिल की भी यही राय है। हज़रात अज़वाजे मुतह्हरात का अहले बैत होना खालिस कुर्आन से साबित है, नीज़ एक हदीस शरीफ से भी इस का सुबूत फराहम होता है; हज़रत अनस से हज़रत उम्मुलमुमेनीन जैनब की शादी के वाकिए के सिलसिले में मनकूल है कि आप सल्ल0 हज़रत आयशा रज़ि0 के हुजरे में तशरीफ ले गये तो आप सल्ल0 ने फरमाया कि अस्सलामु अलैकुम या अहललबैत व रहमतुल्लाहि व बरकातुह (ऐ घर वालियो! तुम पर अल्लाह की सलामती और रहमत और बरकतें हों) (बुखारी)।

इसी तरह आप सल्ल0 की तमाम जुर्रियाते तय्यबात हज़रत अब्दुल्लाह, हज़रत रुकैय्या, हज़रत इब्राहीम, हज़रत क़ासिम, हज़रत जैनब, हज़रत उम्मे कुलसूम और हज़रत फातिमा रज़ि0 अहले बैत नबवी में दाखिल व शामिल हैं। यह अलग बात है कि आपके साहबज़ादों का बचपन ही में इन्तेकाल हो गया लेकिन आप सल्ल0 की चारों साहबज़ादियाँ माशा अल्लाह ज़िन्दा रहीं, हज़रत उम्मे कुलसूम को छोड़ कर तीनों साहबज़ादियां साहबे औलाद हुईं लेकिन सिर्फ हज़रत फातिमा रज़ि0 से आप सल्ल0 की मुबारक नस्ल चल रही है, अल्लाह तआला हसनी व हुसैनी दोनों शाखों को दुनिया में क़ायम व दायम और बाक़ी व सलामत रखे। आमीन!

आप की जुर्रियाते तय्यबात खुसूसन हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि0 के अहले बैत होने का सुबूत वह सहीह अहादीसे मुबारका हैं, जिन में मज़कूर है कि आयते ततहीर (अहज़ाब 33) के नुज़ूल के बाद आपने उन को अपनी चादरे मुबारका में लिया, और आप सल्ल0 ने आयते ततहीर तिलावत फरमाई, फिर यह दुआ की कि "ऐ अल्लाह यह भी मेरे अहले बैत हैं इनसे हर तरह की बुराई और गंदगी को दूर फरमां दे और इनको मुकम्मल तौर पर पाक साफ फरमा दे। (मुस्लिम, अहमद, तिर्मिज़ी) बिला शुब्हा आप की यह दुआ क़ुबूल हुई और लफ्ज़े अहलेबैत के इतलाक में यह भी शामिल हो गये और इस बुनियाद पर यह हज़रात भी अहलेबैत के सही मिसदाक़ है, चुनांचे अल्लामा क़ुर्तुबी और हाफिज़ इब्ने कसीर ने तहरीर फरमाया है कि अहलेबैत में अज़वाज मुतह्हरात के साथ यह चारों हज़रात, हज़रत फातिमा, हज़रत हसन, हज़रत हुसैन और हज़रत अली रज़ि0 भी शामिल हैं। (दायरतुल मआरिफ 577/3)। और हज़रत ईमाम राज़ी ने तहरीर फरमाया है कि "यह कहना ज़्यादा बेहतर और आला है कि अहलेबैत का मिसदाक़ आप सल्ल0 की औलादे अतहार और अज़वाजे मुतह्हरात हैं, इनमें हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन भी शामिल हैं, नीज़ हज़रत अली करमल्लाह वजहु भी आप सल्ल0 से खुसूसी निसबत व तअल्लुक़ और खानगी कुर्ब रखने के सबब अहले बैत में से हैं।"

हज़रत उम्मुलमुमेनीन रज़ि0 और आप सल्ल0 की जुर्रियाते तय्यबात की तरह अहलेबैत नबवी में बनू हाशिम खास तौर से और आले अब्बास, आले अली, आले

जाफर और आले अकील रज़ि0 भी दाखिल हैं जिन के लिए ज़कात व सदक़ात का माल बगैरह लेना शरअन हराम है। नीज़ बाज़ रवायात से भी इन सब का अहलेबैत होना साबित है, एक हदीस शरीफ में आप सल्ल0 ने फरमाया है कि हज़रत अब्बास मुझ से हैं और मैं हज़रत अब्बास से हूँ। (तिर्मिजी) और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 से मरवी एक रिवायत में है कि, जब पीर का दिन आया तो सुबह के वक़्त हज़रत अब्बास रज़ि0 की औलाद में से हम सब आप सल्ल0 की खिदमत में हाजिर हुए आप सल्ल0 ने अपनी चादर मुबारक हम सब को ओढ़ाई और फिर दुआ फरमाई। (तिर्मिज़ी)

अहले बैत नबवी सल्ल0 के फज़ायल– किताबो सुन्नत में हज़रात अहलेबैत नबवी के फज़ाएल व मनाकिब बहुत तफ्सील से वारिद हुए हैं।

हज़रात उम्महातुल मुमेनीन की कद्र व मंजिलत और फजीलत व अज़मत के लिए इतनी बात काफी है कि अल्लाह तआला ने आप सल्ल0 की बीवी की हैसियत से इन सब का इन्तिखाब फरमाया और इसकी मन्जूरी अता फरमाई। (अहज़ाब 50)

और इन सब को "या निसाअन नबी" के मोअज़्ज़ज़ खिताब से याद फरमाया (अहज़ाब/32) और इन सबको "अज़वाजन नबी" के शरफे आली से हमकिनार फरमाया, नीज़ इन सबको अल्लाह तआला ने "तमाम मुमेनीन की माँ" का बुलन्द दरजा देकर इनके मुक़ाम व मर्तबा को खूब बुलन्द फरमाया है। (अहज़ाब/6)

इसी तरह अल्लाह तआला ने इन सब को "तुम आम औरतों जैसी नहीं हो" कह कर दुनिया की तमाम औरतों से बालातर और मुम्ताज़ शान अता फरमाई। (अहज़ाब/32)। और अल्लाह तआला ने इन की शाने आली में आयते ततहीर नाज़िल फरमाई और इन से ततहीर का वादा फरमाया नीज़ अल्लाह तआला ने हज़रत उम्मुलमुमेनीन की आप सल्ल0 से रिश्त–ए–ज़ौजियत को दुनिया व आखिरत में दवाम बख़्शा है।

इसी तरह अहादीसे मुबारका में हज़रात उम्मुलमुमेनीन के फज़ायल व मनाकिब करसत से बयान हुए हैं, बिला शुब्हा हज़रात उम्महातुल मुमेनीन अल्लाह तआला की मुन्तखब करदह हैं, और इन सबसे आप सल्ल0 की शादी मुबारका अल्लाह तआला की इजाज़त व हुक्म से हुई। एक हदीस में आप सल्ल0 ने फरमाया है कि "मैंने अपना या अपनी किसी बेटी का उस वक़्त तक निकाह नहीं किया जब तक हज़रत जिब्रील अल्लाह तआला के पास से "वही" लेकर मेरे पास नहीं आ गये। हज़रात उम्महातुल मुमेनीन की इस इज्तमाई फज़ीलत के अलावह हर एक की अलाहदा–अलाहदा फजीलत व मनक़बत अहादीसे मुबारका में वारिद हुई है। इसकी तफसील हदीस व सीरत और तारीख व मग़ाज़ी की तमाम बड़ी किताबों में मौजूद है।

आप सल्ल0 की "जुर्रियाते तय्याबात" में चार साहबज़ादियाँ हज़रत जैनब, हज़रत रुकैय्या, हज़रत उम्मे कुलसूम और हज़रत फातिमा रज़ि0 हैं, सब ही बाहयात रहीं, सीन्ने रुश्द को पहुँचीं। मक्का से मदीना हिजरत कीं, सब की शादियां हुईं। हज़रत उम्मे कुलसूम के अलावा सब साहिबे औलाद हुईं। सबसे आप सल्ल0 को बड़ी मुहब्बत व उनसियत थी, आप सल्ल0 ने सबके सिलसिले में अपनी मुहब्बत व तअल्लुक़ का इज़हार फरमाया है, चुनांचे आप सल्ल0 ने अपनी सबसे बड़ी साहबज़ादी हज़रत जैनब की शान व मनक़बत में फरमाया कि "यह मेरी चारों बेटियों में सबसे अफज़ल तरीन बेटी है, मेरी वजह से इसे मुसीबत

पहुँची (ज़रकानी) और इनके शौहर हज़रत अबुल आस बिन रबी के मुक़ाम व तअल्लुक़ को आप सल्ल0 ने वाज़ेह करते हुए फरमाया कि "इस शख़्स का तअल्लुक़ जो हमसे है वह तुम सब अच्छी तरह जानते हो, तुमको इसका माल हाथ लग गया है तो यह माल अतियाए इलाही है, मगर मैं पसन्द करता हूँ कि तुम इस पर एहसान करो और माल वापस कर दो"। इसी तरह हज़रत जैनब के साहबज़ादे हज़रत अली आप को बहुत महबूब थे। यही नवासे रसूल फतहे मक्का के दिन आप सल्ल0 की ऊटनी पर आप सल्ल0 के पीछे बैठे हुए थे। नीज़ इनकी साहबज़ादी नवासिये रसूल हज़रत उमामा भी आप सल्ल0 को बहुत महबूब थीं और यह भी आप से बहुत मानूस थीं, कभी–कभार नमाज़ के दौरान दोश मुबारक पर चढ़ जातीं और सल्ल0 को इनका यह अमल नागवार भी न होता था। एक मौके पर आप सल्ल0 ने हज़रात उम्महातुल मुमेनीन की मौजूदगी में फरमाया कि "यह ज़र्रीन हार मैं अपने महबूब तरीन अहल को दूंगा"। आप सल्ल0 ने हज़रत उमामा को बुलाया उनकी आखों को अपने दस्ते मुबारक से साफ किया और फिर वह हार इनके गले में डाल दिया। (मुस्नद अहमद)

हज़रत जैनब, उनके शौहर और उनकी औलाद से आप सल्ल0 को बड़ी मुहब्बत व उनसियत थी। हज़रत जैनब की वफात का आप पर बहुत असर था। कफन में आप सल्ल0 ने अपनी चादर मुबारक अनायत फरमाई और यह हुक्म दिया कि "इस चादर को सब से अन्दर की तरफ जिस्म से मिला कर इस्तेमाल करना"।

(मुस्लिम)

हज़रत रुकैय्या रज़ि0 आप सल्ल0 की दूसरी साहबज़ादी हैं, वह आप सल्ल0 को बहुत अजीज़ थीं, जब यह अपने शौहर हज़रत उस्मान ग़नी के साथ मक्का से हब्शा हिज़रत कर गई, कुछ दिनों तक आप को इन दोनों की कोई ख़बर न मिली, हुस्ने इत्तिफाक़ एक खातून आईं और इन्होंने खबर दी कि मैंने इन दोनों को देखा है, आप सल्ल0 को एक गोना तसल्ली हुई फिर आप सल्ल0 ने इन दोनों को क्या खूब दुआ दी कि "अल्लाह तआला इन दोनों के साथ हो" (सीरतुल मुस्तफा) और इन दोनों की मनक़बत में इरशाद फरमाया कि "हज़रत इब्राहीम और हज़रत लूत के बाद यह पहला जोड़ा है, जिन्होंने अल्लाह तआला के रास्ते में हिज़रत की"। (हाकिम) फतहे बद्र के दिन हज़रत रुकैय्या इन्तक़ाल फरमा गईं, आप सल्ल0 ग़ज़्व–ए–बद्र से वापस हुए क़ब्र मुबारक पर तशरीफ लाये, वे अख्तियार आँखों से (रहमत के) आँसू जारी हो गए और इतना रोए कि आँसू क़ब्र पर गिरने लगे।

हज़रत रुकैय्या के इन्तक़ाल पुरमलाल के बाद हज़रत उम्मे कुलसूम की शादी बाहुक्म इलाही हज़रत उस्मान से कर दी गई। आप सल्ल0 ने निक़ाह के वक़्त हज़रत उस्मान को बुला कर फरमाया कि यह हज़रत जिब्रील हैं जो कह रहे हैं कि अल्लाह तआला का हुक्म है कि मैं अपनी दूसरी बेटी हज़रत उम्मे कुलसूम तुम से ब्याह दूं। (हाकिम)

हज़रत उस्मान के सिलसिले में हज़रत उमर के शिक्वह के मौक़ा पर आप सल्ल0 ने हज़रत उम्मे कुलसूम की फज़ीलत व मनक़बत में इरशाद फरमाया कि "क्या मैं तुम्हारी बेटी हफसा के लिये उस्मान से बेहतर शौहर और उस्मान के लिए तुम्हारी बेटी से बेहतर बीवी न बतला दूँ, हज़रत उमर ने अर्ज किया कि जरूर बतला दें, इस पर आप सल्ल0 ने इरशाद फरमाया कि अपनी बेटी हफ्सा का निकाह मुझ से कर दो और मैं अपनी बेटी उम्मे कुलसूम का निक़ाह उस्मान से कर देता हूँ। (बुखारी)

शेष पृष्ठ .....31 पर

दो साहसी युवतियाँ

—इदारा

एक हिन्दू किसान जिसके पास केवल कच्चा दस बीघा (पक्का चार बीघा) खेत था। दो लड़के और एक लड़की थी, बड़ी सन्तान लड़की थी जो अब जवान हो चुकी थी। बड़ी मुश्किलों से एक जगह शादी तय हुई। नियत समय पर धूम धाम से बारात आई, बारात में लगभग सौ लोग थे, बाजा–गाजा भी था। बारात उसके द्वार पहुँची, बारात को बिठाया गया, चाय–पानी हुआ। अब सौदे बाजी होने लगी, दूल्हे के बाप ने एक लाख नक्द और हीरो होंडा की माँग की, लड़की का बाप सक्ते में आ गया, बारातियों के सामने हाथ जोड़ कर खड़ा हुआ, और उसकी आँख से आँसू टपक रहे थे, उसे लगने लगा कि भंवरी फेरी के बिन ही बारात लौट जाएगी। लड़की बिन ब्याही रह जाएगी। रोते हुए बोला भाईयो! पढ़ी लिखी सुन्दर लड़की के सिवा मेरे पास कुछ नहीं है, कर्ज लेकर आप लोगों के खान–पान का प्रबन्ध किया है, कृपा करें, क्षमा करें, ब्याह के पश्चात एक बीघा खेत बेच कर जो मिलेगा भेंट कर दूंगा। लड़के का बाप बोला, एक बीघा खेत बीस हजार से अधिक में बिकने का नहीं, लालची दूल्हा भी बोल पड़ा, पाँच बीघे का स्टाम्प लिखे बिना भंवरी न होगी। लड़की का बाप करीब था कि स्टाम्प लिख दे कि लड़की का मसअला था, बारात लौट जाएगी तो दूसरा कौन मेरी पुत्री को ब्याहेगा।

इस बात की पूरे गाँव में चर्चा थी, यह खबर लड़की की सहेलियों द्वारा लड़की को भी पहुँची, बस क्या था लड़की आपे से बाहर हो गई और रिश्तेदार औरतों के हाँ–हाँ करने पर भी घर से निकल कर बारात में जा पहुँची और चिल्ला कर कहा, मुझे यह विवाह मंजूर नहीं है, कदापि नहीं हरगिज नहीं, पिता जी चिन्ता न करें मैं बिन ब्याही रहूँगी लेकिन इन लालचियों के घर किसी दशा में जाने को तैयार नहीं। लड़की की यह बात सुन कर गाँव वाले लाठियाँ लेकर आ गये और उसी दम बारातियों को गाँव से बाहर कर दिया। लड़की का बाप दुखी भी था और खुश भी कि उसकी लड़की ने साहस से काम लेते हुए उसकी लाज रख ली। यह कहानी नहीं वास्तविक घटना है, गाँव का नाम नहीं लिखा गया। अब देखना यह है कि उस साहसी लड़की को कोई बहादुर लड़का ब्याहने को आगे बढ़ता है या वह बेचारी बिन ब्याही ही रहती है।

एक मुसलमान लड़की के रिश्ते की बात चल रही थी, लड़के की माँ–बहनों ने लड़की देखी, खूबसूरत, सेहतमन्द लड़की थी, पसन्द किया, रिश्ता तय हो गया। निकाह की तारीख मुकर्रर हो गई, मुकर्ररा वक्त पर बारात आई। दूल्हे मियाँ ग्रेजुएट थे, उनके कई मनचले साथी बारात में थे। एक साथी ने कहा, आज तुम्हारा निकाह है, तुम बड़े बेवफा हो, कभी दुल्हन का फोटो तुमने दिखाया? दूल्हे मियाँ बोले, यार! जब मैंने नही देखा तो तुम को कैसे दिखाता। अब सब साथी बोल पड़े, यह कैसी शादी, जब तूने लड़की को देखा ही नहीं, न उसका फोटो देखा

तो कैसे शादी को तैयार हो गये? दोस्तों की बात का दूल्हे मियाँ ने बड़ा असर लिया और अपने बाप से कह दिया कि मैं लड़की या उसका फोटो देखे बिना निकाह न कबूल करूँगा। बाप ने बहुत समझाया कि तुम्हारी माँ और बहनों ने देख कर पसन्द किया अब तुम क्या बेइज्ज़ती कराओगे? मगर दूल्हे मियाँ की जिद बाकी रही। इस गुफ्तगू की ख़बर लड़की के बाप को मिली। बाप आया, दूल्हे मियाँ को मनाया, मगर दूल्हे मियाँ न माने। बड़ी फिक्र हुई कि अब क्या हो? लड़की का कोई फोटो भी न था। बाप का इरादा था कि फोटो दिखा दे इसलिए कि लड़की सेहतमन्द और खूबसूरत थी, मगर अब बाप क्या करे। यह खबर लड़की के घर वालों में ही नहीं पूरे गाँव में फैल गई। और लड़की के घर वालों पर उदासी छा गई। यह खबर दुल्हन की सहेलियों के जरिये दुल्हन को भी पहुँच गई। लड़की दीनीयात से पूरी तरह मुज़य्यन (सुसज्जित) थी। बाप को बुलाया, बाप सर झुकाए बेटी के सामने आया, लड़की बोली अब्बा जान! शरीअत में इसकी गुंजाइश है कि लड़का अपनी होने वाली दुल्हन को देख ले, इसमें आप की कोई बेइज्ज़ती नहीं, लड़के को बुला लीजिए मैं उसको अपना चेहरा दिखा दूंगी। अगर्चि बाप को यह पसन्द न था मगर क्या करता, मजबूर था, दूल्हे मियाँ को अन्दर ले गया। दूल्हे मियाँ ने लड़की का चेहरा देखा, बहुत खूबसूरत थी। देख कर बाहर आए और साथियों से कहा यार! लड़की तो चाँदसूरत है। साथी बहुत खुश हुए और सब निकाह पर राजी हो गए। अब निकाह की इजाजत के लिए तीन आदमी लड़की के पास गये और इजाजत चाही, लड़की ने साफ आवाज में कहा, मुझे दूल्हे मियाँ पसन्द नहीं हैं, इसलिए निकाह की इजाज़त नहीं है। तीनों आदमियों ने बाहर आकर जब यह खबर सुनाई तो बाराती सन्नाटे में आ गये और फौरन सब खिसकना शुरु हुए। आखिर में दूल्हे मियाँ के बाप और उसके मनचले दोस्त भी बड़ बड़ाते हुए वापस हुए।

इस तरह लड़की ने अपने बाप की बेइज्ज़ती करने वाले मनचले दूल्हे मियाँ से बदला ले लिया, शादी तो उसकी कहीं न कहीं हो ही जाएगी। ❑❑

अच्छे लोगों की संगत .....

सब नमाज़ पढ़ने वाले हैं। सब माशा अल्लाह, अल्लाह वाले हैं, उसका लाभ एक दूसरे को पहुँचता है। नमाज़ सब साथ में पढ़ते हैं, उसमें संगत का लाभ मिलता है। और इसी प्रकार जब हज करते हैं तो एक साथ रहने का फाएदा होता है। इसलिए हमारी हर चीज़ सामूहिकता के साथ रखी गई है। रोज़ा एक साथ रखना है, नमाज़ एक साथ पढ़नी है, हज एक साथ करना है। इसी प्रकार एक साथ रहने का आदेश है। जब अच्छे लोगों के साथ हम मिलेंगे–जुलेंगे तो हमारे अन्दर भी अच्छाई पैदा होगी। अल्लाह हम सबको अच्छी संगत दे। आमीन

❑❑

हज़रात अहले बैत .....

हज़रत उम्मे कुलसूम से भी आप को बड़ी मुहब्बत थी, इनकी वफात पर बहुत रन्जीदा हुए, कफन में अपनी चादर मुबारक यह कह कर इनायत की कि इसको कफन में सबसे अन्दर की तरफ इस्तेमाल किया जाए, इनकी वफात पर बहुत अफसुरदह हुए। एक रिवायत में है कि आप सल्ल0 इनकी कब्र के किनारे बैठे हुए थे और आँखों से आँसू जारी थे। (सीरतुल मुस्तफा)

❑❑

इस्लामी सभ्यता की विशेषताएं

--मुस्तफ़ा हसनी अस्सबाई

कुछ विद्वानों ने सभ्यता की परिभाषा यह की है: 'सभ्यता ऐसी सामाजिक व्यवस्था है जो इन्सान को सांस्कृतिक उद्देश्यों की प्राप्ति में ज़्यादा से ज़्यादा मदद देती है'। सभ्यता के मौलिक तत्व चार होते हैं: भौतिक व आर्थिक संसाधन, राजनैतिक तंत्र, शिष्टाचार से संबन्धित नियम और मान्यताएं तथा ज्ञान–विज्ञान व कला का स्थायित्व। किसी सभ्यता के परवान चढ़ने और संगठित होने के लिए कुछ भौगोलिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक तत्वों का पाया जाना ज़रूरी है। उदाहरण के लिए भाषा, दीन–धर्म, शिक्षा और प्रशिक्षण।

सभ्यता का इतिहास उस समय से शुरु होता है जब से इन्सान ने इस ज़मीन पर सुकून व स्थायित्व प्राप्त किया है। सभ्यता की कड़ियाँ निरंतर एक–दूसरे से जुड़ी हुई हैं, जिनको हर कौम आने वाली कौम की ओर परिवर्तित करती चली आ रही है। शायद कोई कौम ऐसी नहीं गुज़री, जिसने ऐतिहासिक सभ्यताओं के कथानकों में कुछ न कुछ पृष्ठों की वृद्धि न की हो। अलबत्ता वह चीज़ जो एक सभ्यता को दूसरी सभ्यता से उच्चता व प्रधानता दिलाती है, वह उन आधारों का स्थायित्व व दृढ़ता है, जिन पर उस सभ्यता का भवन खड़ा होता है, तथा वह प्रभाव और गुण हैं जो उससे पूरी मानवता को मिलते हैं। जो सभ्यता अपने मिशन और सन्देश में जितनी ज़्यादा उच्च आदर्शों की पोषक और सार्वभौमिकता की परिचायक होगी, जितनी ज़्यादा इन्सान–दोस्त और अपने सिद्धांतों में जितनी ज़्यादा हक़ीकत पसन्द होगी, उतनी ही ज़्यादा वह इतिहास में अमर और आदरणीय मानी जाएगी।

हमारी इस्लामी सभ्यता भी इन्सानी सभ्यताओं के सिलसिले की एक कड़ी है। इससे पहले भी अनेक सभ्यताएं गुज़र चुकी हैं और इसके बाद भी आती रहेंगी। इस्लामी सभ्यता के जन्म लेने के भी कुछ कारण थे, कुछ तत्व थे, जिन्होंने इसको चमत्कारपूर्ण महानता के शिखर पर पहुँचाया। और इन्सानी उन्नति के इतिहास में इस सभ्यता ने जो भव्य भूमिका अदा की है, आस्थाओं और विचारों, ज्ञान–विज्ञान और कला तथा राजनीति और राज्य–शासन के क्षेत्र में इसने जो अविस्मरणीय योगदान दिया है, उनकी भी कुछ चर्चा कर लें। अतः वह प्रमुख और स्पष्ट विशेषताएं, जो इस्लामी सभ्यता के इतिहास का अध्ययन करने वालों को अपनी ओर आकृष्ट करती हैं निम्नलिखित हैं–

इस्लामी सभ्यता की पहली विशेषता यह है कि वह एकेश्वरवाद (तौहीद) के अक़ीदे की बुनियाद पर क़ायम हुई है। यह वह एक मात्र सभ्यता है जो एक अल्लाह की आज्ञाकारिता की ओर मानवता की दावत देती है। वह अल्लाह जिसकी बादशाही और हुकूमत में कोई उसका भागीदार नहीं है, केवल उसकी इबादत की जानी चाहिए और उसी को सब आशाओं व आवश्यकताओं की पूर्ति का एक मात्र स्रोत मानना चाहिए– "इय्या–क–नअ़बुदु व इय्या–क नस्तईन"। वही है जो इज़्ज़त व ज़िल्लत देता है, सारी बख़्शिशें व अनुकम्पाएं उसी के हाथ में है। आसमानों और ज़मीन में कोई चीज़ ऐसी नहीं, जो उसके अधिकार क्षेत्र से बाहर हो।

एकेश्वरवाद के अभिप्राय और उसके तक़ाज़ों को दिल व दिमाग़ में रचा–बसा देने का ही चमत्कार था, जिसने इन्सान के मान–सम्मान को ऊंचा किया और जनता को हाकिमों और बादशाहों के आतंक

व नोच–खसोट से आज़ाद कराया। 'राजा' और 'जनता' के बीच संबंधों की सही परिवेश दिया और सबकी निगाहों को एक मात्र अल्लाह की ओर फेर दिया, जो सारी सृष्टि का सृष्टा और सारे जहाँ का पालनहार व मालिक है।

इस आस्था का इस्लामी सभ्यता पर इतना ज़बरदस्त प्रभाव पड़ा की वह सारी पिछली व अगली सभ्यताओं, व्यवस्थाओं में और ज्ञान, कला और साहित्य के क्षेत्र में आगे निकल गयी। इस्लामी सभ्यता की दूसरी विशेषता यह है कि वह अपनी रुचि और रुझान के कारण पूरी मानवता पर हावी है और अपने पैग़ाम और मिशन के एतिबार से सर्वव्यापी व सार्वलौकिक है। अतः कुर्आन में कहा गया है– "ऐ लोगो! हमने तुमको पैदा किया है एक मर्द और एक औरत से, और बनाया है तुमको गिरोह और क़बीले ताकि तुम एक–दूसरे को पहचान सको। वर्ना अल्लाह की नज़र में तुम में सबसे ज़्यादा बुज़ुर्ग वह है जो तुम में सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी (अल्लाह से डरने वाला) है।" (हुजरातः13)

कुर्आन मजीद के इस ऐलान ने विश्व मानवता के एकत्व की बुनियाद न्याय, परोपकार और ईशभय पर रख दी है, अतः इसकी सभ्यता की लड़ी में हर उस उम्मत और क़ौम के विवेकी व ज़हीन लोग शामिल होते चले गये हैं, जिन पर इस्लाम ने अपने प्रभुत्व का झंडा लहराया। यही कारण है कि इस्लाम को छोड़ कर दुनिया की सारी सभ्यताएं केवल एक ही क्षेत्र, क़ौम या नस्ल के नाम पर लोगों पर गर्व कर सकती हैं, जबकि इस्लामी सभ्यता उन सारी क़ौमों व क़बीलों के सपूतों पर गर्व करती है, जिन्होंने मिल–जुलकर सभ्यता के इस विशाल भवन के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अबू हनीफ़ा, मालिक, शाफई, अहमद, अलख़लील (गेलीलियो), अलकिन्दी, अलफ़र्रा, इब्न–रूश्द, (एवेरोस) अबू–सीना (एबेसीनिया) और उनकी तरह के हज़ारों विद्वान विभिन्न भाषाओं, क्षेत्रों व नस्लों से संबंध रखने के बावजूद इस्लाम के ही सुपुत्र थे, जिनके माध्यम से इस्लामी सभ्यता ने मानवता के सामने उच्च विचारधारा के बेहतरीन फल प्रस्तुत किये हैं।

इस्लामी सभ्यता की तीसरी विशेषता यह है कि उसने अपने पूरे जीवन तंत्र में और अपनी सारी व्यवस्थाओं व कार्यकलापों में अख़्लाक़ी (नैतिक) सिद्धांतों को सर्वोपरि स्थान दिया है। इन सिद्धांतों को कभी नज़रअंदाज़ नहीं किया और उनको शासकों, जमाअतों या लोगों के आर्थिक लाभों का साधन कभी नहीं बनाया। शासन, प्रशासन, सियासत, विधि व्यवस्था, युद्ध व शांति, अर्थव्यवस्था ज्ञान–विज्ञान व कला और पारिवारिक व सामाजिक मामलों में, संक्षिप्त यह कि जीवन के सभी क्षेत्रों में इन नैतिक सिद्धांतों को सर्वोपरि रखा। वास्तविकता यह है कि इस मामले में इस्लामी सभ्यता के इतिहास में जैसे महान आदर्श हमें देखने को मिलते हैं और इस्लाम के सपूत जिस चरम सीमा तक पहुँचे हैं, उसकी मिसाल संसार की किसी अन्य सभ्यता में नहीं मिलती। इस क्षेत्र में इस्लामी सभ्यता ने इतिहास के पृष्ठों को जिन सुनहरी गाथाओं से सजाया है वे अत्यंत चमत्कारपूर्ण हैं। वास्तव में इस्लामी सभ्यता वह एक मात्र सभ्यता है, जिसने मानवता को असंदिग्ध सफलता की गारंटी दी और उसे असफलता व दुर्भाग्य के काले साँपों से बचाया।

इस्लामी सभ्यता की चौथी विशेषता यह है कि यह सभ्यता ज्ञान के सच्चे सिद्धांतों पर ईमान रखती है और सबसे ज़्यादा पवित्र सिद्धांतों व अक़ीदों का अपना मर्कज़ क़रार देती है। इस सभ्यता ने मानव मन और मानव बुद्धि, दोनों को एक साथ संबोधित किया है तथा दिल व दिमाग़ दोनों को एक साथ प्रेरित किया है। इस मामले में भी इस्लामी सभ्यता दुनिया की सभी दूसरी सभ्यताओं से प्रमुख व

विशिष्ट है। इस विशेषता में भी कोई सभ्यता उसकी शरीक नहीं है।

फिर इस्लामी सभ्यता की एक और विशेषता है, वह यह कि इसने हक़ और इन्साफ़, औचित्य और निष्कलंक न्याय के आधार पर एक ऐसी राज्य व्यवस्था का निर्माण किया है, जो पूरी तरह दीन व अक़ीदे पर इस विशेषता के साथ केन्द्रित है कि वह न आध्यात्मिकता की उन्नति में कोई बाधा बनती है और न राजतंत्र के चलाने में किसी विपरीत प्रभाव का शिकार होती है और न सभ्यता के फलने–फूलने में कोई रुकावट बनती है। बल्कि स्थिति यह है कि धर्म ही वह केन्द्रीय तत्व है जो इस राज्य की उन्नति में सबसे प्रमुख भूमिका अदा करता है। बग़दाद, दमिश्क़, क़ाहिरा, क़ुरतुबा और ग़रनाता की मस्जिदों के दरों व दीवारों से ज्ञान की जो ज्योति फूटी थी, उसने सारे संसार को रौशन कर दिया था। इस्लामी सभ्यता इतिहास की वह मात्र सभ्यता है जो धर्म को सियासत से अलग नहीं करती। इसके बावजूद इन दोनों के समन्वय से उन ख़राबियों में से कोई ख़राबी पैदा नहीं हुई, जिनसे यूरोप मध्यकाल में दो–चार हुआ था। इसका कारण यह है कि इस्लामी व्यवस्था में शासन शासक के हितोपार्जन के लिए नहीं होता, बल्कि हक़ और इन्साफ़ क़ायम करने के लिए होता है। निःसंदेह राज्य का प्रमुख मुसलमानों का ख़लीफ़ा, उनका हाकिम व सर्वोच्च नेता (अमीर) है, लेकिन विधि निर्माण शरीअ़त के विद्वानों के हाथ में है। क्या राजा और क्या प्रजा, क्या विद्वान और क्या निरक्षर, क़ानून के सामने सब बराबर हैं। कोई छूट का हक़दार न ज़्यादती का भागीदार। बस जो भी बड़ाई है वह ईशभय और जनसेवा पर आधारित है।

फ़ातिमा नामी एक स्त्री चोरी के अपराध में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की अदालत में लायी जाती है, अपराध सिद्ध होता है तो सज़ा घटाने की सिफ़रिश की जाती है। इस पर नबी सल्ल0 जो सरासर दया व रहमत थे क्रोधित हो उठे और फ़रमाया "अगर (इसकी जगह) फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद सल्ल0 भी चोरी करती तो मैं उसके भी हाथ काट डालता।" (बुख़ारी व मुस्लिम) एक बार आप सल्ल0 ने फ़रमाया "सारी मख़्लूक़ (सृष्टि) अल्लाह का कुटुम्ब है, अतः अल्लाह को सबसे ज़्यादा महबूब वह है जो अल्लाह के कुटुम्ब को ज़्यादा फ़ायदा पहुँचाए।" यह है वह धर्म जिस पर हमारी सभ्यता स्थापित हुई, इसमें किसी ख़ानदानी या दौलत मंद को कोई विशेषता, कोई उच्चता प्राप्त नहीं है। क़ुर्आन रसूल सल्ल0 को निर्देश देता है "कह दो कि मैं तुम्हारी तरह का एक इन्सान हूँ।" (कह्फ़:110)

इस्लामी सभ्यता की पांचवीं विशेषता जो उल्लेखनीय है, वह है इसकी विस्मयकारी धार्मिक सहिष्णुता है। यह एक ऐसी विशेषता है जो अन्य किसी ऐसी सभ्यता में नहीं पायी जाती, जो धार्मिक बुनियादों पर आधारित हो। यह तो संभव है कि जो किसी धर्म पर और ख़ुदा पर ईमान न रखता हो, वह सारे धर्मों को एक ही नज़र से देखे और उनके अनुयायियों से एक जैसा व्यवहार करे, लेकिन किसी भी धर्म का जो अनुयायी यह ईमान रखता है कि उसका धर्म ही सही है, उसका अक़ीदा ही सच्चा और राही है और फिर उसे तलवार उठाने, मुल्क जीतने और शासन करने और अदालत की कुर्सी पर बैठने का मौक़ा भी मिल जाए, लेकिन फिर भी उसका धर्म व अक़ीदा उसे इस बात की इजाज़त न दे कि वह शासन में धांधली और ज़ुल्म से काम ले और अदालत व इन्साफ़ के तरीक़ों से मुंह मोड़ ले और लोगों को अपना धर्म अपनाने पर मजबूर करे, तो ऐसा आदमी इतिहास का सबसे विचित्र प्राणी समझा जाएगा।

अतः यह स्थिति कितनी अजीब व बेगिसाल होगी कि इतिहास में एक पूरी सभ्यता ऐसी मौजूद हो, जो धार्मिक बुनियादों पर कायम हो और उन्हीं सिद्धान्तों पर उसका निर्माण व विकास हुआ हो, लेकिन इसके बावजूद उसने मानव इतिहास में सबसे ज़्यादा रवादारी, सहिष्णुता, संयम, इन्साफ़ व इन्सानियत का रवैया अपनाया है। यह कारनामा हमारी इस्लामी सभ्यता ने अंजाम दिया है। हमारे लिए यही जान लेना काफी है कि इस्लामी सभ्यता इस मामले में एक मात्र सभ्यता है। ❑❑

बकरी वाली बड़ी बी .....

इस लेख में इतना सही है कि बड़ी बी ने हज का काफिला देख कर और यह सुन कर कि यह लोग अल्लाह के घर जा रहे हैं एक कैफियत तारी हुई और वह काफिले के साथ बेखुद हो कर चल दीं, अल्लाह ने उनकी मदद की, उनको हज व जियारत की नेअमत से नवाजा, बाकी दूसरी बातें मजमून को मुरत्तब करने के लिए अपने ज़ेहन से लिखी गई हैं।

इस वाकिए से अल्लाह की कुदरत सादिक होती है कि वह चाहता है तो एक बे सरो सामान वाले को भी हज जैसी इबादत बड़ी आसानी से करा देता है। ❑❑

जगनायक .....

रोकता है? इन्हीं हालात में हुजूर सल्ल० को अपनी कुरैशी शाख़ बनू हाशिम के अक्सर अफ़राद के साथ तीन साल गुज़ारने पड़े[1]।

मुहासरे (घेरे) से रिहाई–

आखिर वह दिन आया कि हिशाम बिन अम्र, जुहैर बिन उबई, उमय्या बिन मुगैरा, मुतइम बिन अदी और जमआ बिन अस्वद जो कि मुसलमानों के तईं कुछ नर्मी और इन्सानियत का पहलू रखते थे, कुरैश के जुल्म व ज़ियादती से मुसलमानों को नजात दिलाने के लिए मशवरा करने लगे और आपस में सोच विचार और मज़लूमों पर इस कदर सख़्ती को ना पसन्द करते हुए इस बात पर मुत्तफिक (सहमत) हुए कि कुरैश से इन हज़रात की रिहाई के लिए कोशिश की जाए। चुनांचे यह सब लोग मिल कर हरम में गए, जुहैर ने सब लोगों को मुख़ातब करके कहा "ऐ मक्के वालो! यह क्या इन्साफ है कि हम लोग आराम से बसर करें, और बनू हाशिम को आब व दाना नसीब न हो, खुदा की कसम! जब तक यह जालिमाना मुआहिदा चाक न कर दिया जाएगा, मै बाज़ न आऊँगा। अबूजहल बराबर से बोला, हरगिज़ कोई इस मुआहिदे को हाथ नहीं लगा सकता, जमआ ने कहा ग़लत कहता है, जब यह लिखा गया उस वक़्त भी हम राज़ी न थे। दूसरी तरफ हुजूर सल्ल० को "वही" के ज़रिए मालूम हुआ कि काबा के अन्दर रखा हुआ वह दस्तावेज़ दीमक की नज़र हो गया है और उसमें सिवाए "बिस्मिल्लाह" के सब ख़त्म हो गया है। आपने यह बात अबूतालिब को बताई, उन्होंने कुरैश से कहा और इसी हाल में मुतइम ने अन्दर जाकर हाथ बढ़ा कर दस्तावेज़ निकाला तो उसके एक हिस्से को दीमक खा चुका था, और उसमें लिखी हुई इबारत ख़त्म हो गई थी, यह बात कुफ़्फ़ार को दिखा कर दस्तावेज़ चाक कर दिया और मुतइम बिन अदी, अदी बिन कैस, ज़मआ बिन अस्वद, अबुल बखतरी और ज़ुहैर सभी हथियार बाँध–बाँध कर बनू हाशिम के पास गए और उनको दर्रे से निकाल लाए। मुसलसल तीन बरस तक हुजूर सल्ल० और तमाम आले हाशिम शअब अबूतालिब के महसूर रहे थे, उसके बाद उसी हिसार (घेरे) से उनकी रिहाई हुई। ❑❑

1. अस्सीरतुन नबविया, जहबी 1/221

इस्लाम में न्याय, सहानुभूति और सद्व्यवहार

—मौलाना सैय्यद हामिद अली

इस्लाम में इन्सानों के हक़ व अधिकार के सम्बन्ध में अल्लाह के ये संक्षिप्त शब्द सारगर्भित निर्देश की हैसियत रखते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है– "निःसंदेह अल्लाह न्याय का, सद्व्यवहार का और नातेदारों को उनके हक़ देने का आदेश देता है।" कुर्आन–16:90)

प्रत्येक व्यक्ति मुस्लिम हो या ग़ैर मुस्लिम, दोस्त हो या दुश्मन, न्याय पाने का अधिकारी है। दुश्मनी में भी किसी व्यक्ति या गिरोह पर अन्याय करना ठीक नहीं।

"और ऐसा न हो कि किसी गिरोह की दुश्मनी तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम न्याय करना छोड़ दो। न्याय करो यही तक़वा (धर्म परायणता) से लगती हुई बात है"। (कुर्आन–5:8)

हर इन्सान की जान आदर पाने योग्य है। अकारण और नाहक़ किसी का भी खून नहीं बहाया जा सकता। यही हैसियत इन्सान के माल की भी है, उसे उससे छीना नहीं जा सकता। हर इन्सान की प्रतिष्ठा बनी रहे यह उनका हक़ है, किसी हाल में भी उस पर हाथ नहीं डाला जा सकता। हर मनुष्य को अपनी धारणा के अनुसार इबादत करने का अधिकार है, किसी को धर्म–परिवर्तन करने पर मजबूर नहीं किया जा सकता। किसी के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता। किसी के पूजा–स्थलों का अपमान नहीं किया जा सकतां, किसी के धार्मिक गुरुओं को बुरा भला नहीं कहा जा सकता, किसी के 'पर्सनल लॉ' को समाप्त नहीं किया जा सकता। इज़्ज़त व सम्मान के साथ जीवित रहने का प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार प्राप्त है, इस अधिकार से किसी को वंचित नहीं किया जा सकता। उचित व वैध तरीक़ों से रोज़ी कमाने का प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार है, किसी का यह अधिकार छीना नहीं जा सकता। शिक्षा प्राप्त करना और धर्म के अनुसार अपनी औलाद को शिक्षा दिलाना हर आदमी का अधिकार है। किसी का यह अधिकार समाप्त नहीं किया जा सकता। औरत हर हाल में आबरू और इज़्ज़त की अधिकारी है, उसकी इज़्ज़त को किसी हाल में भंग नहीं किया जा सकता। कानून प्रत्येक के लिए है, इस संबंध में किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं किया जा सकता। तात्पर्य यह कि इस प्रकार के मानव अधिकार, अमीर–दुश्मन सबके लिए हैं और इस्लाम की मौलिक शिक्षा केवल यही नहीं है कि सबके साथ न्याय हो, बल्कि न्याय की रक्षा और उसकी स्थापना मुसलमान के जीवन का मूल उद्देश्य बताया गया है।

'ऐ ईमान लाने वालो! न्याय को स्थापित करने वाले बनो और अल्लाह के लिए (इन्साफ़ की) गवाही देने वाले बनो, चाहे गवाही स्वयं तुम्हारे या तुम्हारे माता–पिता या रिश्तेदारों के विरुद्ध हो। जिसके विरुद्ध गवाही दी जा रही है चाहे वह धनवान या निर्धन हो तो अल्लाह उसका अधिक भला चाहने वाला है तो तुम इच्छाओं के पालन में न्याय से न हटो।' (कुर्आन–4:135)

अत्याचारी को चाहे कुछ ढील मिल जाए, लेकिन उसका परिणाम बड़ा दर्दनाक होता है। ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की एक हदीस अबू मूसा रज़ि0 से रिवायत की गई है कि: "प्यारे नबी सल्ल0 ने फ़रमाया: अल्लाह ज़ालिम को ढील देता है, मगर जब पकड़ता है तो फिर छोड़ता नहीं। फिर आप सल्ल0 ने कुर्आन की यह आयत पढ़ी "और इसी प्रकार तुम्हारे रब

की पकड़ होती है, जब वह ज़ालिम बस्तियों को पकड़ता है, निःसंदेह उसकी पकड़ सख़्त और दर्दनाक है।" (बुखारी–मुस्लिम)

अल्लाह के अप्रिय और अवज्ञाकारी बंदे आख़िरत (परलोक) में नूर से वंचित होंगे, वे अंधेरों में भटकते–भटकते नर्क में जा गिरेंगे। प्रत्येक बुराई जो इन्सान दुनिया में करेगा, वह आख़िरत में अंधेरे का रूप धारण कर लेगी और जुल्म बहुत से अंधेरों का रूप धारण करेगा। एक हदीस है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया– "जुल्म कियामत के दिन अंधेरों का रूप धारण करेगा।"
(बुखारी–मुस्लिम)

इससे न्याय का महत्व और जुल्म की बुराई अच्छी तरह स्पष्ट हो जाती है। यह बात भी जान लेना ज़रूरी है कि न्याय करने के लिए यह शर्त बिल्कुल नहीं है कि लोग हमारे साथ न्याय करें, तब ही हम भी न्याय करें। लोग न्याय करें या अन्याय हमें हर हालत में न्याय करना और अन्याय से बचना चाहिए। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया है–

"लोगों के पीछे चलने वाले न बनों कि यूं कहने लगो, अगर लोग सद्व्यवहार करेंगे, तो हम भी करेंगे और अगर वे जुल्म करेगे तो हम भी करेंगे। नहीं! अपने आपको इस बात के लिए तैयार करो कि अगर लोग अच्छा व्यवहार करें तो तुम अच्छा व्यवहार करो और वे दुर्व्यवहार करें तो तुम अन्याय न करो।" (तिर्मिज़ी)

इस्लाम ने केवल न्याय करने ही का आदेश नहीं दिया, बल्कि उसने आगे बढ़ कर मनुष्यों के साथ सद्व्यवहार का आदेश दिया है। यह आदेश भी सब इन्सानों के लिए है। इसमें मुस्लिम और ग़ैर–मुस्लिम के बीच कोई अंतर नहीं। हमारे दिल में हर इन्सान के लिए दया होनी चाहिए। प्यारे नबी सल्ल0 ने फ़रमाया–

"दया करने वालों पर वह "दयावान" (अल्लाह) दया करेगा। धरती वालों पर दया करो, आसमान वाला तुम पर दया करेगा।"
(तिर्मिज़ी–अबु दाऊद)

हर इन्सान आदम की संतान होने के कारण हमारा भाई है और भाई के साथ जो व्यवहार होना चाहिए, वही व्यवहार हमें इन्सान से करना चाहिए। हम उस पर दया करें, दिल से उसका भला चाहें, उसे अच्छी से अच्छी सलाह दें, कठिनाई में उसकी सहायता करें। ज़रूरत पर उसके काम आएं, उससे सज्जनता का व्यवहार करें और उसकी जो सेवा हम कर सकते हों, उससे पीछे न हटें।

जो व्यक्ति जितना अधिक बेसहारा, कमज़ोर, गरीब और परेशान है, उतना ही वह हमारी सहानुभूति, हमदर्दी, ध्यान और सहायता के योग्य है। हमारा कर्तव्य है कि हम उसे सहारा दें।

'अबू हुरैरह रजि.0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया– "विधवाओं और ग़रीबों के लिए भाग–दौड़ करने वाला अल्लाह की राह में भाग–दौड़ करने वाले की तरह है और मेरा विचार है, आप सल्ल0 ने यह भी कहा, वह रात को जाग कर इबादत करने वाले की तरह है, जो कभी नहीं थकता और उस व्यक्ति की तरह है जो हमेशा रोज़े से रहता है"। (बुख़ारी–मुस्लिम)

अल्लाहु अक्बर (अल्लाह महान है)! ग़रीबों और विधवाओं की सेवा करने का कितना बड़ा बदला है। अनाथ के बारे में प्यारे नबी सल्ल0 ने फ़रमाया– "जो व्यक्ति अपने और किसी दूसरे व्यक्ति के यतीम (अनाथ) के खाने–पीने आदि की व्यवस्था करेगा, वह स्वर्ग में मेरे साथ इस प्रकार रहेगा। (आप सल्ल0 ने) अपने अंगूठे के पास की उंगली और बीच की उंगली से संकेत किया और इन दोनों के बीच थोड़ी–सी दूरी रखी।" (बुख़ारी)

अनाथ का पालन–पोषण करने वाले का स्थान कितना ऊँचा है। इसके विपरीत अनाथ का माल हड़प करने वालों का परिणाम बड़ा ही दर्दनाक और भयानक है। कुर्आन मजीद में है– "जो लोग यतीमों का माल जुल्म से खाते हैं वे अपने पेट में आग भरते हैं और वे नर्क की भड़कती हुई आग में जाएंगे।" (कुर्आन– 4:10)

यह बात फिर याद कर लीजिए कि ये निर्देश मुसलमानों और गैर–मुस्लिमों दोनों के बारे में है।

जो लोग हमारे पड़ोस में रहते हैं– चाहे वे मुसलमान हों या गैर–मुस्लिम, वे हमारी सहानुभूति और सद्व्यवहार के दूसरों की अपेक्षा अधिक अधिकारी हैं। कुर्आन मजीद में पड़ोसियों के साथ सद्व्यवहार का आदेश दिया गया है। रिश्तेदार पड़ोसी के साथ भी और उस पड़ोसी के साथ भी जिससे कोई रिश्तेदारी नहीं है। और हदीसों से भी मालूम होता है कि पड़ोसी का हम पर असाधारण हक और अधिकार है। प्यारी नबी सल्ल0 फ़रमाते हैं–

"जिबरील मुझ से पड़ोसी के बारे में बराबर ताकीद करते रहे, यहां तक कि मुझे ख़याल होने लगा कि वे उसे (सम्पत्ति) का वारिस (उत्तराधिकारी) बना देंगे।" (बुखारी–मुस्लिम)

❑❑

दोस्त और दुश्मन.....

सुथरी और स्थायी प्रेम के मार्ग पर प्रेषित करते हैं। और जो मुहब्बत अगर दिल की गहरायी से की जाती है तो उसके अजीब व ग़रीब और अनोखे वाकेयात पेश आते हैं, और इन्सानी समाज में एक नई ज़िन्दगी, नया जोश और नया उत्साह पैदा हो जाता है और पूरी ज़िन्दगी खुदा के रंग में रंग जाती है: (अनुवादः हम दीन की इस हालत पर हैं जिसमें अल्लाह ने हमको रंग दिया है और दूसरा कौन है जिसके रंग देने की हालत अल्लाह से बेहतर हो)।

दूसरी चीज़ नफ़रत व अदावत है। जिस तरह इन्सान के अन्दर उल्फ़त व मुहब्बत का पाया जाना एक फ़ितरी बात है, उसी तरह नफ़रत व अदावत भी उसकी फ़ितरत व प्रकृति में दाख़िल है। और जिस तरह इन्सान अपने महबूब को पहचानने में ग़लती करता है इसी तरह अपने दुश्मन को पहचानने में भी ग़लती कर जाता है। इसलिए वो अपने महबूब को दुश्मन समझ बैठता है। ऐसे व्यक्ति की हालत कुछ ऐसी ही है जैसे कि कुर्आन ने बयान किया है: (अनुवादः अगर वो हिदायत का रास्ता देखें तो उसको अपना तरीक़ा न बनाएं और अगर गुमराही का रास्ता देख लें तो उसको अपना तरीक़ा बना लें)।

इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह तआला ने हमारे दुश्मन की निशानदेही फ़रमा दी है कि शैतान इन्सान का दुश्मन है, इसलिए इरशाद है: (अनुवादः ये शैतान बेशक तुम्हारा दुश्मन है, इसलिए तुम उसको अपना दुश्मन ही समझते रहो, वो तो अपने गिरोह को केवल इसलिए बातिल की ओर बुलाता है ताकि वो लोग दोज़ख़ियों में से हो जाएं)। इसीलिए अल्लाह तआला ने साफ़–साफ़ और स्पष्ट रूप से ये हुक्म फरमा दिया है कि: (अनुवादः और शैतान के कदम से कदम मिला कर मत चलो अस्ल में वो तुम्हारा खुला दुश्मन है) अतः दुश्मन के तय हो जाने के बाद अगर हमने शैतान को अपना दुश्मन नहीं समझा और हमने उससे और इन्सानों में उसके मदद करने वालों से बचने की कोशिश नहीं की तो हम उनकी तफ़रीह करने वालों का खिलौना और उनका शिकार बन सकते हैं जो हमसे और हमारे दीन इस्लाम से खिलवाड़ करना चाहते हैं, इसीलिए हुज़ूर अकरम सल्ल0 ने हमें खाने पीने, उठने बैठने, पहनने ओढ़ने, और सोने जागने में उनका तरीक़ा अपनाने से रोका है।

❑❑

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

– डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

पाक सेना ने दिखाए तेवर

अमेरिका की ओर से 80 करोड़ डॉलर की आर्थिक मदद रोकने के एक दिन बाद पाकिस्तान ने आंखें तरेरते हुएं कहा कि वह अमेरिकी मदद का मोहताज नहीं है। इस्लामाबाद ने दावा किया है कि वह अमेरिकी मदद के बिना भी सैन्य अभियान चलाने में सक्षम है। हालांकि वाशिंगटन की ओर से अभी तक उसे इस बाबत कोई अधिकारिक सूचना नहीं दी गई है।

पाक सेना के प्रवक्ता ने कहा 'अमेरिका की ओर से सैन्य सहायता रोके जाने के मामले में हमें कोई आधिकारिक सूचना नहीं मिली है। बहरहाल, हमने अतीत और वर्तमान में बिना किसी विदेशी मदद के अपने संसाधनों के बलबूते कई सफल सैन्य अभियानों को अंजाम दिया है।' मालूम हो कि आतंकवाद के खिलाफ पूर्ण अभियान चलाने में पाकिस्तान की आनाकानी से खफा अमेरिका ने उसे 2.7 अरब डॉलर की वार्षिक आर्थिक मदद का एक–तिहाई हिस्सा रोकने का ऐलान किया था। व्हाइट हाउस के चीफ ऑफ स्टाफ टॉम डॉनिलिन ने खुद मीडिया को इस फैसले से रूबरू कराया था। उन्होंने संकेत दिया था कि ओबामा प्रशासन का यह कदम पाकिस्तान में अमेरिकी सैनिकों की संख्या घटाने की इस्लामाबाद की बढ़ती मांग का जवाब है।

अमेरिका मदद रोकने का फैसला सही –भारत ने पाकिस्तान को दी जाने वाली सैन्य मदद रोके जाने के अमेरिकी फैसले का स्वागत किया है। भारत ने कहा कि हथियारों की भारी मौजूदगी से इस क्षेत्र में संतुलन को खतरा पैदा होता है। विदेश मंत्री एस0एम0 कृष्णा ने कहा, दोनों देशों के बीच हालातों को देखते हुए यह वांछनीय नहीं है कि यह क्षेत्र अमेरिकी हथियारों से भर दिया जाए। इससे इस क्षेत्र का संतुलन बिगड़ जाएगा। भारत इस कदम का स्वागत करता है।

इजराइल तक पहुँची बदलाव की बयार– ट्यूनिशिया में शुरु हुई क्रांति की आंच अब इजराइल में भी महसूस की जा रही है। यहां पर घरों के बढ़े दाम और सरकार की नीतियों से लोग खफा हैं। 14 जुलाई से शुरु हुआ 1.5 लाख लोगों का विरोध प्रदर्शन जारी है। यह अब तक के सबसे बड़े प्रदर्शनों में से एक है। कुछ विद्वान यहां के विरोध को अरब क्रांति के विस्तार के रूप में मानने से परहेज करते हैं। यहां के विरोध प्रदर्शनों को देखकर दो राय नहीं है कि इजराइल में हो रहा विरोध भी जैसमीन क्रांति की एक कड़ी है। यहाँ भी लोगों को एकजुट करने के लिए फेसबुक का सहारा लिया जा रहा हैं ❑❑

Phone: 0522-2267429 (S) 2260671 (R)

MOHD. MIYAN JEWELLERS

एक भरोसेमन्द सोने, चान्दी के ज़ेवरात की दुकान

1-2, Kapoor Market, Victoria Street, Lucknow-226003

Phone: 9415087427

अनस मैरेज हाल

बारात, वलीमा व किसी भी खुशी के मौके के लिए कम खर्च में हम से सम्पर्क करें

कपूर मार्केट (मलिक मार्केट) विक्टोरिया स्ट्रीट, लखनऊ

Shop : 2266408
Residence: 2260884

IQBAL & CO.

Deals :
Friend Embroidery Machine
Deals in :
Embroidery Raw Materials
& Spare Parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala
Police Chowki, Chowk, Lucknow-226063

HAJI SAFIULLAH & SONS Jelwellers

Mohd. Aslam
Phone : 0522-4028050, 2268845
Mobile : 9454586265, 9839654567
9335913718

Nagina Market, Akbari Gate, Lucknow
Opp. Gadbad Jhala, Aminabad, Lucknow